इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD

आपका अपना बैंक, हर कदम आपके साथ
YOUR OWN BANK, ALWAYS WITH YOU

इंड पाटलिपुत्र

अंक-7, वर्ष : 2025, अप्रैल-सितम्बर, 2025
अंचल कार्यालय पटना की अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका

अंक 7

TOWN HALL MEETING
for Business Development
TOWN HALL MEETING
for Business Development
शिक्षा
बिहार

प्रबंधकीय मंडल

मुख्य संरक्षक
श्री विवेक
क्षेत्र महाप्रबंधक (एफजीएम)
पटना

संरक्षक
श्री अमन कुमार झा
अंचल प्रबंधक व उप महाप्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

उप संरक्षक
श्री शैलेश कुमार
उप अंचल प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

परामर्शदाता
श्री नवनीत
सहायक महाप्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

मार्गदर्शक
श्री प्रलयंकर सिंह
मुख्य प्रबंधक (एच आर)
अंचल कार्यालय पटना

संपादक
श्री दीपक कुमार साव
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय पटना

संपादन सहयोग

श्री अमन कुमार
मुख्य प्रबंधक (ऋण निगरानी)

श्री सत्यम श्रीवास्तव
मुख्य प्रबंधक (क्रेडिट)

श्री पवन कुमार उपाध्याय
मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा)

एवं अन्य समस्त टीम
अंचल कार्यालय, पटना

इंड पाटलिपुत्र

अंचल कार्यालय पटना की अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका

अंक-7, वर्ष : 2025, अप्रैल-सितम्बर, 2025

शुभ-संदेश

1	क्षेत्र महाप्रबंधक महोदय का संदेश		4
2	अंचल प्रबंधक महोदय की कलम से		5
3	उप अंचल प्रबंधक महोदय कलम से		6
4	संपादकीय		7

गद्य-लेखन

5	हिंदी साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल जी को विनम्र श्रद्धांजलि		08
5	बिहार में जीविका दीदियों का उत्कर्ष और बैंक की भूमिका	शैलेश कुमार	10
6	राष्ट्र वंदना का शाश्वत गीत 'वंदे मातरम्' : 150वां वर्ष	प्रलयंकर सिंह	12
7	भारतीय बैंकिंग उद्योग में थर्ड पार्टी प्रोडक्ट (TPP) का योगदान	कन्हैया चौधरी	14
8	भारत-रूस-चीन संबंधों का विकसित होता स्वरूप : सहयोग प्रतिस्पर्धा और रणनीति संतुलन	अवकाश कुमार	15
9	जन सुरक्षा योजना : एक अवलोकन	राहुल पराशर	16
10	बैंकिंग क्षेत्र एवं सतर्कता के विविध आयाम	दीपक कुमार	17
11	भारत के विकास में प्रवासी भारतीयों (NRIs) का योगदान	प्रियेश कुमार	19
12	वर्तमान समय में बैंकिंग जगत में अनुपालन (compliance) का महत्व	शशि कुमार पाल	20
13	आस्था का महाकुंभ : प्रयागराज 2025 - नए परिप्रेक्ष्य में	पवन कुमार उपाध्याय	22
14	साइबर धोखाधड़ी से बचाओ	सत्यम श्रीवास्तव	22
15	भारत की अर्थव्यवस्था में एमएसएमई का योगदान	निरंजन कुमार	23
16	नासमझ इंसान	संतोष कुमार	25
17	एक शाखा प्रबंधक का रविवार	धीरज भारद्वाज	27
18	सरकारी नौकरी	दीपक झा	29
19	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और बैंकिंग	मनोज कुमार	32
20	बैंकिंग व्यवस्था में ऋण निगरानी का महत्व	अमन कुमार	33
21	बैंक की वसूली में लोक अदालत की भूमिका	नवनीत	35

कव्यांजलि

22	ऐ जिंदगी	संतोष कुमार	18
23	मुसाफिरों के तोहफे	ऋषि राज	26
24	भोर		
25	हम सबके प्रिय : हमारे अटल जी	शिखा	31
26	ग्राहक शिकायत और बैंक	रवि प्रकाश	29
27	भारतीय ग्रामीण बैंकिंग	अमित कुमार	36
28	हम बच्चें क्या है!	रमेश कुमार झा	37
29	हमारा समय	विकास कुमार सिन्हा	37

विविध

30	हिंदी पखवाड़ा - 2025	38
31	आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन	40
32	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	41
33	राष्ट्रीय कर्मयोगी प्रशिक्षण	42
34	कलाकृतियाँ	43
35	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	44
36	मुंशी प्रेमचंद जयंती के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन	46
37	कार्यपालक निदेशक श्री ब्रजेश कुमार सिंह जी का पटना दौरा	49
38	मेगा शिविर का आयोजन	50

प्रकाशन सम्पर्क

इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय पटना, राजभाषा विभाग, प्रथम तल, इंडियन बैंक परिसर, बुद्ध मार्ग, पटना - 800001

दूरभाष : 0612-2219480, ई-मेल : zopatna@indianbank.co.in

यह गृह पत्रिका केवल आंतरिक परिचालन हेतु है। "इंड पाटलिपुत्र" के इस अंक में प्रकाशित कोई भी सामग्री जैसे लेख, कविता संबंधित लेखकों की है। इसमें संपादक अथवा बैंक का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : support@anjaniprakashan.com

क्षेत्र महाप्रबंधक महोदय का संदेश

श्री विवेक
क्षेत्र महाप्रबंधक
पटना

पटना अंचल की राजभाषा गृह पत्रिका 'इंड पाटलिपुत्र' आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। पत्रिका के माध्यम से आप सभी से संवाद का अवसर मिला। क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, पटना के अंतर्गत पटना, मुजफ्फरपुर, गया, भागलपुर बिहार में एवं राँची, देवघर झारखंड में अंचल हैं। इनमें पटना अंचल का अपना एक विशिष्ट स्थान है। पटना अंचल कुल 638 समर्पित साथियों एवं 16917 करोड़ (यथास्थिति 31 दिसंबर 2025) का कुल व्यवसाय के साथ उत्कृष्ट सेवा हेतु सदैव तत्पर है।

इंडियन बैंक "अनुपालनपूर्ण, सतत एवं समावेशी विकास" विज़न के साथ व्यवसायिक संवृद्धि हेतु प्रतिबद्ध है। मेरा मानना है कि कार्यालय/शाखा स्तर पर अपने दैनंदिन निर्धारित कार्यों को नियमित रूप से यथासमय कार्यों का सुचारू रूप से निष्पादित किया जाए तो हम अपने नियंत्रक कार्यालयों के अनावश्यक फॉलोअप या अतिरिक्त दबाव से बचेंगे, काम की गुणवत्ता में भी बढ़ोतरी होगी एवं अपने मौजूदा ग्राहकों की विश्वसनीयता को भी कायम रख पायेंगे। हमारे लिए ग्राहक सर्वोपरि है। हमारा मुख्य फोकस ग्राहक शिकायत का त्वरित निपटान एवं उत्कृष्ट सेवा प्रदान करना है। हम यह अनिवार्य रूप से ख्याल रखें कि ग्राहक शिकायत एकदम न्यूनतम हो और कार्यरत दफ्तरी से लेकर उच्चतम अधिकारी तक बैंक के प्रतिनिधित्व के रूप में अपने कार्यों एवं केआरए का जिम्मेवारी, कर्तव्यनिष्ठा एवं अनुशासनात्मक ढंग से निष्पादन करें।

अनुपालन हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बने। अनुपालन को अपनाकर ही हम अपने व्यक्तित्व में सुधार ला सकते हैं और अपनी संस्था की छवि अपेक्षाकृत बेहतर और मजबूत बना सकेंगे। हम यह संकल्प लें कि हम अपने कार्यालय या शाखा में ससमय पहुँचे एवं यह अनिवार्य रूप से सुनिश्चित करें कि कार्यालय या शाखा यथासमय खोला जाए। अपने शाखा परिसर की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें, समस्त फाइलों व दस्तावेजों का सुव्यवस्थित रखरखाव करें ताकि ससमय आवश्यक चीजें ढूंढने पर मिल जाए, पुराने बैनर एवं अनावश्यक चीजें हटाई जाए, ग्राहकों विशेषकर वरिष्ठ ग्राहकजन को बैठने के लिए समुचित व्यवस्था उपलब्ध हो एवं शाखा का माहौल खुशनुमा मनोरम व आकर्षणीय बनाने का भरसक प्रयास किया जाए। सर्वविदित है कि आज पीएसयू एवं निजी बैंक दोनों जमाराशियों (बचत व चालू खातों) में कमी से जूझ रहे हैं। अपने ग्राहकजन से आत्मीय व मधुरतम संबंध बनाकर डीएसए (प्रत्यक्ष विक्रय एजेंट) पर अपनी निर्भरता को कम कर सकते हैं और शुल्क आधारित आय एवं क्रॉस सेलिंग पर विशेष रूप से फोकस कर सकते हैं।

बिहार विकसित राज्य के रूप में उभरता हुआ ऐसा राज्य है जिसमें संभावनाओं के विविध आयाम दृष्टिगोचर हो रहे हैं, भरपूर मात्रा में पोटेनशियल विराजमान है। ऐसी स्थिति में हम अपने सम्मानीय ग्राहकों, सरकारी संस्थाओं, स्कूल, कॉलेजों, अस्पतालों, व्यवसायिक संस्थाओं से अच्छे संबंध बनाये रखें ताकि हम अपने व्यवसायिक संवृद्धि में तेजी व रफ्तार ला सकें। खाता खोलते समय ही अपने ग्राहकों को एटीएम, चेक, इंड स्मार्ट ऑनबोर्डिंग व अन्य डिजिटल सुविधायें प्रदान किया जाना सुनिश्चित करें। डिजिटलीकृत समस्त सेवाएं, चाहे वह डिपोजिट या अग्रिम हो या अन्य जरूरी सेवाओं से संबंधित हो, हमारे सम्मानीय ग्राहक घर बैठे इंड स्मार्ट के माध्यम से कर सकते हैं, जरूरी है हम अपने ग्राहकों को इसके प्रति जागरूक व संवर्द्धन करें। वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य में चुनौतियों व प्रतिस्पर्धाओं के इस दौर में जरूरी है कि डिजिटलीकृत सारी सेवाओं अपने ग्राहकों को दें और अपने समर्पित व उत्कृष्ट सेवाओं के माध्यम से प्रत्येक दिन नये ग्राहकों को जोड़े ताकि हम अपने ग्राहक बेस को मजबूत कर सकें। यह संकल्प लें कि राजभाषा हिंदी के माध्यम से अपना समस्त बैंकिंग कार्य व्यवहारिक रूप से जरूर करें ताकि न केवल संवैधानिक प्रावधानों का समुचित अनुपालन हो सकें अपितु अपने बैंकिंग उत्पादों के प्रसार व ग्राहक सेवाओं में उत्कृष्टता को अभीष्ट बना सकें।

हमारी हार्दिक इच्छा है कि पटना अंचल अपने संकल्पों, कृत्यों के द्वारा नया कीर्तिमान स्थापित करें। आप सभी का जीवन सुखद, समृद्ध, संपन्न, स्वस्थ हो! इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें।

(श्री विवेक)

इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD

अंचल प्रबंधक महोदय की कलम से

अमन कुमार झा
अंचल प्रबंधक
व उप महाप्रबंधक

प्रिय साथियो,

'इंड पाटलिपुत्र' के इस सप्तम अंक के माध्यम से आप सभी से रूबरू होने में अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। ऐसे तो भौतिक रूप से बैठकों में या वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये आप सभी से संवाद होता रहता है पर यह अपने आप में एक सुखद अनुभव होता है कि अपने अंचल की गृह पत्रिका के माध्यम से आप सभी से सहृदयपूर्वक जुड़ने का अवसर प्राप्त हो। सबसे पहले आप सभी को इस नूतन वर्ष 2026 के सुखद, समृद्ध, सुस्वास्थ्य की मंगलमय कामना करता हूँ। आप सभी इस नये वर्ष में सकुशल, उत्साही व अपने दिनचर्या में ताजगी, उमंग, स्नेह, बंधुत्व, भाईचारा, क्लेश रहित मानवीय गुणों को समग्रता में समाहित करने का प्रयास करें ताकि न केवल व्यक्तिगत रूप से समृद्ध बने अपितु भावनात्मक रूप से हमारी डोर इतनी मजबूत हो जिससे न केवल पारिवारिक जीवन खुशहाल हो, अपितु सामाजिक जीवन रागात्मक हो और हमारी अपनी विशिष्ट पहचान बने। इससे संस्थागत योगदान में अभूतपूर्व गुणात्मक परिवर्तन ला सकते हैं और अपने दैनिक जीवन के कर्मक्षेत्र में नीरसता, निराशा, अवसाद, हीनता, बोझिलता, शुष्कता जैसे अधोमुखी मनोभावों का परित्याग कर उर्जावान, आत्मविश्वास, आशावान, सरस, मस्त, प्रसन्नचित्त उर्ध्वमुखी गुणों से भरपूर खिले हुए पुष्प की तरह होंगे जिसकी खुशबू से परिवार, संस्था, समाज सभी महक उठेंगे और हम सभी वास्तव में राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्त भूमिका निभाने में सफल होंगे। वित्तीय वर्ष 2025-26 के दिसम्बर तिमाही का व्यवसायिक परिणाम आ चुका है। शीर्ष प्रबंधन की अपेक्षाओं व आवंटित लक्ष्य को पटना अंचल ने बखूबी प्राप्त किया है। इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। सचमुच आप सभी ने दिल से मेहनत किया है और जिस अपनत्व के साथ, स्वामित्व लेकर आप सभी ने अपने-अपने कार्य का निष्पादन किया है, निःसंदेह यह काबिले तारीफ है। इस समग्र व्यवसायिक परिणाम पर जब हम गहरी चिंतन करते है तो पाते है कि पटना, वैशाली, भोजपुर, बक्सर चार जिलों में स्थित शाखाएं, आरएंडजीआर, आरएसी, आरएपीसी, एमएपीसी, डीएएमसी, सीएपीसी एवं अंचल कार्यालय में कार्यरत समस्त स्टाफ सदस्यगण ने अपना भरपूर योगदान दिया है और यह अत्यंत सराहनीय है। जरूरत है हम अपने पोटेनशियल या क्षमताओं को पहचानें और उसी के अनुरूप अपेक्षाकृत बेहतर कार्यनिष्पादन करें ताकि पटना अंचल किसी भी पैरामीटर में निगेटिव न रहे और हमारी स्थिति सर्वोत्तम हो।

निःसंदेह हमारी बैंकिंग व्यवस्था आज एक निर्णायक दौर से गुजर रही है। एक ओर डिजिटलीकरण, फिनटेक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी आधुनिक तकनीकें बैंकिंग को अधिक सरल, तेज और पारदर्शी बना रही हैं, वहीं दूसरी ओर बढ़ते साइबर जोखिम, अनुपालन दबाव और जनविश्वास की कसौटी भी निरंतर कठोर होती जा रही है। अपने सेवाक्षेत्र में पारदर्शिता लाते हुए सम्मानीय ग्राहकगण की विश्वसनीयता को बनाए रखना, बैंकिंग सेवा व उत्पादों को अक्षरशः नवोन्मेषी तकनीक केंद्रित बनाना एवं बैंकिंग समावेशन के अंतर्गत सामान्य जन को बैंकिंग से जोड़ना हमारा प्रमुख दायित्व है।

एनपीए, साइबर फ्रॉड, डेटा सुरक्षा और नियामकीय अनुपालन बैंकिंग व्यवस्था की स्थायी चिंता बने हुए हैं। वास्तव में बैंकों की भूमिका केवल सेवा प्रदात्ता की नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और संरक्षक की भी बन जाती है। अभीष्ट ग्राहकजन को वित्तीय जागरूकता व डिजिटल साक्षरता प्रदान करना भी हमारा ध्येय है। आवश्यकता इस बात की है कि बैंकिंग व्यवस्था तकनीकी प्रगति के साथ मानवीय संवेदनाओं को भी समान महत्व दे। कहा जाए तो वर्तमान बैंकिंग व्यवस्था केवल आर्थिक गतिविधियों का संचालन नहीं कर रही, बल्कि देश के विकास और सामाजिक संतुलन की धुरी के रूप में कार्य कर रही है। इंडियन बैंक इस दिशा में अनवरत सेवारत व कार्यरत है। इस परिदृश्य में निःसंदेह भाषा की उपयोगिता अनिवर्चनीय है। राजभाषा हिंदी के व्यापक उपयोग से ही हम बैंकिंग कार्यों को ग्राहक केंद्रित त्वरित उत्कृष्ट सेवाजन्य कार्य निष्पादन करने में न केवल सफल होंगे अपितु अपने सम्मानीय ग्राहकों से आत्मीय संबंध स्थापित कर सकेंगे और मौजूदा ग्राहकबेस मजबूत करके भरोसेमंद संबंध कायम कर पाने में भी सक्षम होंगे।

पुनः आप सभी को नव वर्ष की मंगल कामना।

(अमन कुमार झा)

उप अंचल प्रबंधक महोदय का कलम से

शैलेश कुमार
उप अंचल प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

प्रिय साथियो,

अंचल कार्यालय पटना की राजभाषा गृह पत्रिका 'इंड पाटलिपुत्र' के नवीनतम अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हर्षानुभूति हो रही है। इस पत्रिका के माध्यम से आप सभी से संवाद करने का अवसर प्राप्त होता है। वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य विभिन्न चुनौतियों से साक्षात्कार कर रहा है। पीएसयू बैंकों में केवल अग्रिम जैसे एमएसएमई, एग्री, गोल्ड, रिटेल ऋण चिंतनीय विषय नहीं है अपितु देयता पक्ष (Liability Side) यानी डिपोजिट भी हम सभी बैंकर के लिए उतना ही महत्वपूर्ण कारक बन गया है। आशय यह है कि डिपोजिट के संबंध में परंपरागत धारणा खंडित हुई है कि शाखा परिसर में बैठे-बैठे डिपोजिट आ जाएगा। अब डिपोजिट मोबिलाइजेशन का दौर है और हमें अपने सम्मानीय मूल्यवान ग्राहकों, सरकारी व निजी कार्यालयों से विशिष्ट संपर्क स्थापित करने की जरूरत है। अपने बैंकिंग सेवा को तत्परता व प्रतिबद्धता के साथ अपने व्यवहार को सौम्य, कार्य को कुशल व सेवा को डिजिटलीकृत रूप में प्रस्तुत करना होगा। इस प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में अपने बैंकिंग अस्तित्व को बनायें रखना व प्रासंगिक बने रहना बहुत बड़ी चुनौती है। अपने बैंकिंग व्यवसाय को धारदार, मजबूत बनाने के लिए जरूरी है कि हम अपने बैंक के डिजिटल सेवाओं को ग्राहकों तक अनिवार्य रूप से पहुंचायें और यह सुनिश्चित करें कि हमारे समस्त सम्मानीय ग्राहकगण का 'इंड स्मार्ट' ऑनबोर्डिंग हो और वित्तीय लेनदेन व विभिन्न वित्तीय सेवाओं का उपयोग 'इंड स्मार्ट' एप्प के माध्यम से करने के लिए जागरूक करें। ध्यातव्य है कि अनुपालन संबंधी समस्त मापदंडों के साथ व्यवसाय किया जाना है और बगैर फॉलोअप के अनुपालन संबंधी समस्त कार्य यथासमय होना अत्यावश्यक है। वास्तव में हमें अपने कार्यों के प्रति, अपने विभागों के प्रति स्वामित्व (Ownership) का भाव होना जरूरी है और हम सभी अपने स्कील/दक्षता को अपडेट करते रहे ताकि बैंकिंग क्षेत्र में हो रहे बदलाव, नवोन्मेषी तकनीकी को अपनाने में कोई परेशानी न हो। हम सभी को अपने बिजनेस आकड़े को लेकर सचेत रहना है और यह संकल्प करना है कि वर्तमान वित्तीय वर्ष में बैंक के सभी पैरामीटर व लक्ष्यों को हासिल करें और समूचे भारत में पटना अंचल की रैंकिंग को नं. 1 लाने का सार्थक प्रयास किया जाए।

निःसंदेह बैंकिंग व्यवसाय में राजभाषा हिंदी की महत्तम भूमिका है और राजभाषा का प्रचार-प्रसार हमारा संवैधानिक दायित्व भी है। 'इंड पाटलिपुत्र' पत्रिका इस प्रगामी दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। निःसंदेह राजभाषा पत्रिका न केवल स्टाफ सदस्यों के ज्ञानवर्धन में सहायक होती है अपितु उनकी रचनाधर्मिता को सुदृढ़ आयाम प्रदान करते हुए रचनात्मक मंच प्रदान करती है। हमें उम्मीद ही नहीं विश्वास है कि पटना अंचल शीर्ष प्रबंधन की अपेक्षाओं के अनुरूप अपना कार्यनिष्पादन बेहतर ढंग से करने में सफल होगा और हमारी एकजुटता, समयबद्ध प्रयास और सकारात्मक उर्जा से यह तिमाही निश्चित रूप से उत्कृष्ट उपलब्धियों के साथ पूरी होगी। नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

चलते रहिए, बढ़ते रहिए, हौसलों को रखिए साथ,
आपकी मेहनत ही लिखती है- प्रगति की हर बात।

शैलेश कुमार

(शैलेश कुमार)

संपादकीय

दीपक कुमार साव
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, पटना

इंडियन बैंक अंचल कार्यालय पटना की गृह पत्रिका 'इंड पाटलिपुत्र' का यह सप्तम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। सबसे पहले आप सभी को नव वर्ष की अनंत, अशेष मंगलकामनायें।

एक वैदिक उक्ति है, 'आ नो भद्राः क्रतवो चंतु विश्वतः',अर्थात सभी दिशाओं से विचारों को आने दो! यही भारतीय ज्ञान परंपरा है। यह एकरेखीय न होकर साझेदारी, समावेशी व खुलेपन का परिचायक है जो हर दृष्टि से संकुचित या संकीर्ण मानसिकता या दृष्टिकोण को खारिज करता है। भाषा इन्हीं विचारों की संवाहिका होती है। भाषा एवं विचारों के जरिये ही मानव संपूर्ण जीव जगत में एक विशिष्ट सामाजिक प्राणी के रूप में चिन्हित हुआ है।

निःसंदेह दिमागी खुलापन ज्ञान, सहिष्णुता और नवोन्मेष को बढ़ावा देता है और हम नस्ल, प्रांत, धर्म, लिंग, जाति से ऊपर उठकर न केवल सामाजिक सांस्कृतिक स्तर पर अपितु राष्ट्रीय कल्याण व प्रगति में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर पाते हैं। वर्तमान जन जीवन आधुनिक दृष्टि अपनाने के बजाय आधुनिक जीवन शैली पर ज्यादा रहा और यही कारण है कि डायनिंग टेबल पर छुरी-चम्मच से खाना, नए फैशन के कपड़े पहनना, अंग्रेजी बोलना इत्यादि आधुनिकता की पहचान बन गई। हिंदी कथाकार मुंशी प्रेमचंद के गोदान के होरी धनिया जिन्होंने अपने बेटे के दूसरी जाति की एक विधवा लड़की झुनिया से विवाह को मंजूरी दी। क्या वे आधुनिक होने के उदाहरण बन नहीं सकते !

हमारा देश विकसित भारत बनने की राह पर है। यह जरूरी हो जाता है कि हमारे भीतर आत्मगौरव के साथ आत्मनिरीक्षण व आत्मसंशोधन भी हो और हम निरंतर जानने की प्रक्रिया को आत्मसात करते रहें।

भाषाई विविधता में राजभाषा हिंदी की समावेशी प्रवृत्ति व स्वीकृति की व्यापकता भारतीय अखंडता को अटूट बनाने में महत्तम भूमिका निभाती है। हिंदी रचनाकार श्रीकांत वर्मा के शब्दों में कहा जाए,

चाहता तो बच सकता था
मगर कैसे बच सकता था
जो बचेगा, कैसे रचेगा।

भारतवर्ष को औपनिवेशिक से मुक्त कराने में संघर्षशील, संपर्कभाषा के रूप में हिंदी का अप्रतिम योगदान रहा है। बाजारवाद ने हिंदी के वर्चस्व को अपनाया है। आज हिंदी नवीनतम तकनीक को अंगीकार कर न केवल भारत में अपितु अपनी ग्लोबल, बहुआयामी पहचान बनाने में सफल हो रही है। हिंदी चुपचाप बचकर अपनी यात्रा नहीं करती, संघर्षशीलता के साथ रचनाधर्मिता के वैशिष्ट को आत्मसात करते हुए आम जन जीवन के साथ व्यापक संवेदनात्मक सरोकार रखती है।

'इंड पाटलिपुत्र' का यह अंक विविध विचारों व भावों का प्रतिनिधित्व करता है, स्टाफ सदस्यगण के प्यारे बच्चों का कलात्मकताओं को ध्वनित करता है और हिंदी के विशिष्ट साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल के निधन पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

उम्मीद है यह पत्रिका आप सभी को अच्छी लगेगी। हमें आप सभी के सुझावों का इंतजार रहेगा। नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें।

धन्यवाद !

(दीपक कुमार साव)

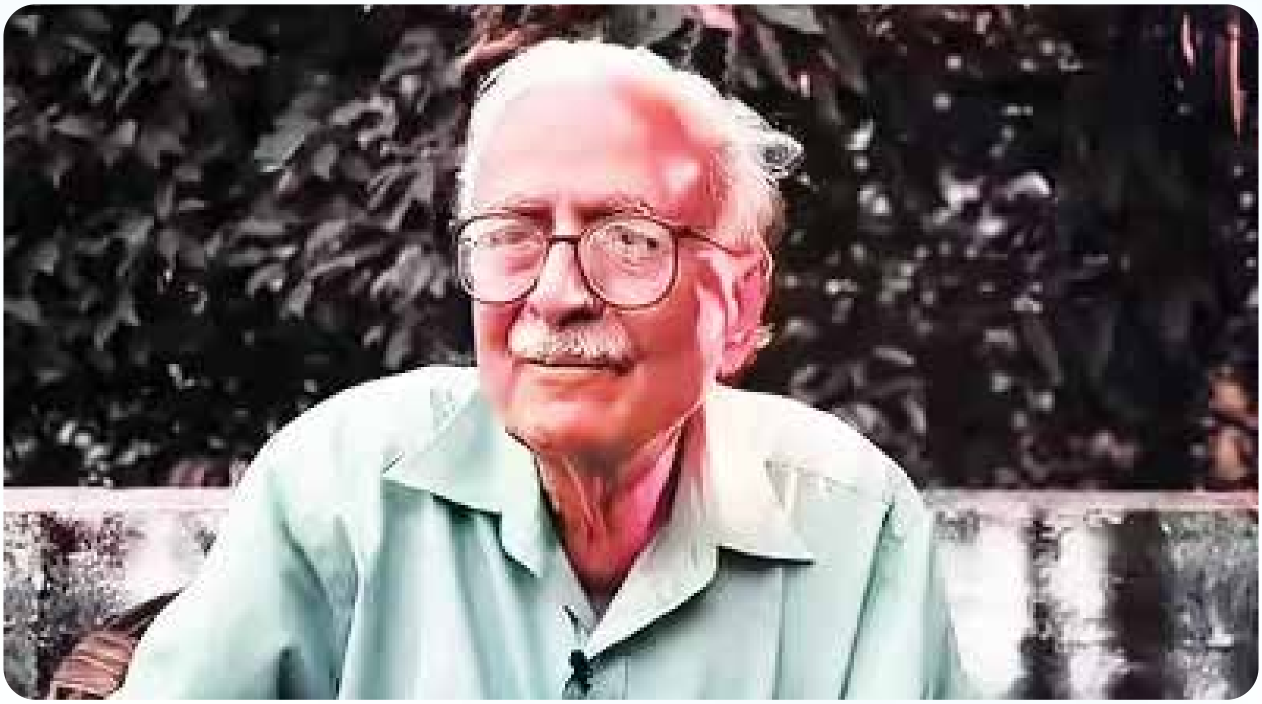

हिंदी साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल (1937-2025) : विनम्र श्रद्धांजलि

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
मैं व्यक्ति को नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था
दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे
साथ चलने को जानते थे।

हिंदी साहित्य में जिन रचनाकारों ने शब्दों की चमक-दमक और बौद्धिक प्रदर्शन के बजाय संवेदना, सादगी और मौन की शक्ति को प्रतिष्ठित किया है, उनमें विनोद कुमार शुक्ल का नाम अत्यंत विशिष्ट है। उन्होंने अपनी सादगी, संवेदनशीलता और अनोखी भाषा-शैली से हिंदी रचना संसार को एक नयी दृष्टि व नया आयाम दिया। उनकी रचनाओं में आम जनजीवन की सहज अनुभूतियाँ, मानवीय रिश्तों की गरिमा और भीतर तक छू लेने वाली संवेदना दृष्टिगोचर होती है। वे ऐसे कवि-कथाकार हैं जिनकी रचनाएं बिना शोर किए, बिना किसी आग्रह के, सीधे पाठक के मन में उतर जाती हैं। सच्चाई यह है कि आज के समय में, जब साधारण से साधारण मनुष्य भी स्वयं को चमकदार आवरण में प्रस्तुत करना चाहता है, विनोद कुमार शुक्ल एक पुरानी, घिसी-पिटी किंतु अत्यंत उपयोगी कमीज़ की तरह सामने आते हैं-जो फैशन से बाहर होकर भी जीवन के लिए अपरिहार्य होती है। वे अपने घर के भीतर से भी संसार को देखते हैं और पाठक को यह महसूस कराते हैं कि घर को बाहर से देखना भी ज़रूरी है। उनकी लेखनी हमें लगातार याद दिलाती है कि इस दौर में बिगड़ते हुए मनुष्य को उसकी मूल मनुष्यता में लौटाना कितना आवश्यक है।

विनोद कुमार शुक्ल की रचनाओं की दुनिया साधारण आदमी की रोज़मर्रा की ज़िंदगी से बनी है-घर, आँगन, रास्ते,

पेड़, कुर्सियाँ, खिड़कियाँ, चुप्पियाँ। यह साधारणपन ही उनकी असाधारणता है। उनकी कविताएँ और कथाएँ जीवन के छोटे-छोटे क्षणों को इस तरह थामती हैं कि वे स्थिर हो जाते हैं, हमारे भीतर टिक जाते हैं। दिल्ली से बहुत दूर एक छोटे से गाँव में जन्म लेकर अपनी रचनाओं के माध्यम से वैश्विक स्तर पर पहचाने जाना अपने आप में एक असाधारण उपलब्धि है। उनकी कविता स्थानीय होते हुए भी पूरी दुनिया से संवाद करती है। गरीब आदमी, व्यवस्था, अस्पताल, डॉक्टर, फीस-इन सब पर उनकी कविता मानवीय करुणा का दस्तावेज़ बन जाती है-

सबसे गरीब आदमी के लिए
सबसे सस्ता डॉक्टर भी
बहुत महँगा है।

यह कोई नारा नहीं, बल्कि यथार्थ की सबसे करुण अभिव्यक्ति है।

उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ-'नौकर की कमीज़', 'दीवार में एक खिड़की रहती थी', 'खिलेगा तो देखेंगे'-हिंदी कथा साहित्य में मील का पत्थर हैं। 'नौकर की कमीज़' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि उस व्यवस्था के विरुद्ध एक मौन विद्रोह है जो मनुष्य को लगातार मातहत बनाए रखना चाहती है।

'दीवार में एक खिड़की रहती थी' जैसे उपन्यास में वे वाक्य के व्याकरण को तोड़ते हैं और उसी टूटन से नया अर्थ रचते हैं। वे कमरे के भीतर रहते हुए बाहर देखते हैं और बाहर जाकर अपने न होने को भीतर से महसूस करते हैं। यह दृष्टि केवल एक बड़े लेखक के पास ही हो सकती है।

विनोद कुमार शुक्ल की भाषा अत्यंत सरल, पारदर्शी और बोलचाल के निकट है, लेकिन अर्थ की दृष्टि से गहरी और बहुस्तरीय। वे अलंकारों के मोह में नहीं पड़ते। उनके यहाँ हास्य के भीतर करुणा छिपी होती है और मौन भी बहुत कुछ कह जाता है।

बच्चों के लिए लिखी उनकी कविताएँ भी इसी कल्पनाशीलता की मिसाल हैं-

पेड़ कभी बैठता नहीं
वह अपना काम करते हुए
खड़ा रहता है।

उनकी कल्पना बच्चों जैसी निष्कलुष है, लेकिन अनुभवों से परिपक्व।

विनोद कुमार शुक्ल का साहित्य किसी घोषित राजनीतिक वक्तव्य का साहित्य नहीं है, फिर भी वह प्रतिरोध का साहित्य है। वह यथास्थिति में धीरे-धीरे सेंध लगाता है। वे हमें वही दिखाते हैं जिसे हम रोज़ देखते हैं, लेकिन देखने के आदी नहीं होते।

पुरुषोत्तम अग्रवाल के शब्दों में, वे विद्वत्ता से अधिक प्रज्ञा के लेखक हैं। वे पाठक को चुनौती नहीं देते, बल्कि आमंत्रित करते हैं। उनके लेखन में विस्मय पात्रों में नहीं, पाठकों में उत्पन्न होता है।

उनकी रचनाएँ ममताभरी गोद की तरह हैं-जहाँ डाँट खाकर रोता हुआ बच्चा भी सुकून पाता है। वे अधूरी तस्वीरों की तरह हैं-खुली हुई, जीवित और लगातार अर्थ रचती हुई।

आज विनोद कुमार शुक्ल भौतिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी पंक्तियाँ हमारे साथ हैं-समुद्र में उतर चुके दरिया की तरह। उनका साहित्य हमें यह विश्वास दिलाता है कि साधारण जीवन भी कविता हो सकता है और चुप्पी भी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन सकती है।

निस्संदेह, विनोद कुमार शुक्ल हिंदी साहित्य के उन विरले रचनाकारों में हैं जिन्होंने कम शब्दों में बहुत कुछ कहने की कला को सिद्ध किया है।

विनोद कुमार शुक्ल के यहां विचार से मनुष्यता नहीं बनती, मनुष्यता से विचार उपजता है। भाषा व्याकरण का पालन नहीं करती, उनकी रचना उनकी कल्पना का व्याकरण है।

बिहार में जीविका दीदियों का उत्कर्ष और बैंक की भूमिका

शैलेश कुमार
उप अंचल प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

ज्ञातव्य है कि बिहार सरकार द्वारा बिहार राज्य में महिला के समावेशी विकास पर विशेष जोर देते हुए महिला सशक्तिकरण हेतु विशेष मुहिम चलाया जा रहा है ताकि महिला संसाधन का समग्र उध्वर्मुखी प्रगति व संवर्धन हो सके और समूचे नारी समाज का सामाजिक, आर्थिक उन्नयन किया जाए। बिहार में गरीबी उन्मूलन, महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण और ग्रामीण आजीविका को स्थायी बनाने के उद्देश्य से जीविका की पहल ने राज्य में एक व्यापक परिवर्तन की शुरुआत की है। आज जीविका से जुड़ी लाखों "दीदियाँ" न केवल आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ रही हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूत कड़ी भी बन चुकी हैं। इस प्रगति के केंद्र में बैंकिंग क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसने वित्तीय पहुँच और आर्थिक अवसरों को नया आयाम दिया है।

जीविका दीदी के बारे में कहा जा सकता है कि

हाथों में मेहनत, आँखों में सपना,
जीविका दीदी ने बदली अपनी रचना।
स्वावलंबन की लौ जलाकर गाँव-गाँव,
संघर्षों से गढ़ा विकास का नया ठांव।

1. जीविका की अवधारणा और उद्देश्य

जीविका मिशन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण गरीब परिवारों, विशेषकर महिलाओं को स्व-सहायता समूहों (स्वयं सहायता समूह) के माध्यम से संगठित कर उनका आर्थिक और सामाजिक उत्थान करना है। महिला समूह आधारित सामूहिक बचत, आंतरिक ऋण की सुविधा, कौशल प्रशिक्षण और उद्यमिता, सामुदायिक नेतृत्व का विकास महत्वपूर्ण ध्येय है। वैश्विक स्तर पर भी स्वयं सहायता समूह मॉडल को महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने, गरीबी दूर करने और आर्थिक विकास में योगदान हेतु प्रभावी माना गया है।

2. जीविका दीदियों का उत्कर्ष / विकास की मुख्य उपलब्धियाँ

(क) आर्थिक सशक्तिकरण - आज बिहार में 1 करोड़ से अधिक महिलाएं जीविका से जुड़ी हुई हैं।

एसएचजी (SHG) के माध्यम से दीदियों नियमित बचत कर वित्तीय अनुशासन सीख रही हैं। आंतरिक ऋण सुविधा ने उन्हें सूदखोरी से मुक्ति दिलाई है।

(ख) उद्यमिता का विस्तार

जीविका दीदियाँ अब पारंपरिक गतिविधियों से आगे बढ़कर विविध तरह के उद्यम चला रही हैं, जैसे-डेयरी, मुर्गीपालन, बकरी पालन, आजीविका कृषि केंद्र, कपड़ा, खाद्य प्रसंस्करण, मसाला यूनिट, ग्रामीण हाट-बाजार संचालन जैसे नवाचार उद्यम है जिनका महिलाओं के समग्र विकास एवं आत्म निर्भर भारत में महत्वपूर्ण योगदान है।

(ग) सामाजिक परिवर्तन

जीविका समूहों ने महिलाओं के आत्मविश्वास और सामाजिक भागीदारी को नई पहचान दी है। पंचायत स्तर पर महिलाओं की सहभागिता बढ़ी है। स्वास्थ्य, स्वच्छता और शिक्षा में जागरूकता आई है। बाल विवाह, दहेज जैसे मुद्दों पर सामूहिक आवाज मजबूत हुई है।

3. जीविका के विकास में बैंकों की भूमिका

बैंक इस मिशन के सबसे मजबूत स्तंभ हैं। जीविका की सफलता इस बात पर आधारित है कि बैंकिंग सेवाएँ कितनी सुगम और भरोसेमंद हैं। बैंकों की भूमिका जीविका दीदी यानी ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने, स्वरोजगार बढ़ाने और उन्हें उद्यमी बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसके लिए बिहार सरकार जीविका बैंक और बैंक सखी जैसी पहल कर रही है ताकि दीदियों को आसानी से लोन, बचत और वित्तीय सेवाएं उपलब्ध हो सकें और वे आत्मनिर्भर बन सकें।

(क) बैंक-स्वयं सहायता समूह लिंकिंग

स्वयं सहायता समूह को बैंक खाते खोलने में सहयोग, बचत खाते के माध्यम से वित्तीय समावेशन, डिजिटल बैंकिंग का प्रशिक्षण

(ख) सामूहिक ऋण सुविधा (स्वयं सहायता समूह बैंक लिंकेज लोन) बैंक जीविका समूहों को कम ब्याज पर ऋण प्रदान करते हैं।

पहली लिंकिंग: 1-2 लाख

क्रमिक वृद्धि: 5-10 लाख तक

बिना गारंटी और न्यूनतम दस्तावेजीकरण

इस ऋण ने ग्रामीण महिलाओं में आत्मनिर्भर उद्यम स्थापित करने की क्षमता बढ़ाई है।

(ग) बैंक सखी

बैंक सखी जीविका समूहों से चयनित महिलाएँ हैं, जो बैंक और ग्रामीण समुदाय के बीच सेतु का काम करती हैं। वे माइक्रो-एटीएम से ग्रामीण घरों तक बैंकिंग सेवाएँ पहुँचाती हैं। इससे बैंक शाखाओं पर दबाव कम हुआ और ग्रामीणों का विश्वास बढ़ा।

(घ) वित्तीय साक्षरता का प्रसार

बैंकों ने वित्तीय जागरूकता व वित्तीय साक्षरता अभियान के द्वारा सरकारी सुरक्षा योजनाओं, डिजिटल बैंकिंग की जानकारी प्रदान की जाती है। बीमा, पेंशन, प्रधानमंत्री जन धन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना जैसी योजनाओं का लाभ पहुँचाया जाता है।

4. आर्थिक विकास पर समग्र प्रभाव

जीविका बैंक साझेदारी ने ग्रामीण बिहार में उल्लेखनीय परिवर्तन लाया है:

- महिलाओं की आय में बढ़ोतरी
- रोजगार अवसरों का विस्तार
- ग्रामीण बाजारों की सक्रियता

वित्तीय समावेशन में देश के अग्रणी राज्यों में बिहार की स्थिति राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत बिहार मॉडल को अन्य राज्यों में भी सराहा गया है।

बिहार में जीविका दीदियों का उत्कर्ष केवल आर्थिक प्रगति की कहानी नहीं है, बल्कि यह सामाजिक बदलाव, महिला सशक्तिकरण और सामुदायिक विकास का सशक्त उदाहरण है। इस पूरे अभियान में बैंकिंग प्रणाली की भूमिका अपरिहार्य रही है।

जीविका और बैंक, दोनों मिलकर "आत्मनिर्भर बिहार" और "सशक्त महिला/समृद्ध समाज" के लक्ष्य को वास्तविकता में बदल रहे हैं।

निःसंदेह जीविका दीदी मिशन का उद्देश्य बिहार की महिलाएं न केवल बिहार में अपितु देश के विकास में अपना अमूल्य योगदान देने में सक्षम हो सके और देश की राजनीति, सामाजिक, आर्थिक विकास में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा सके। यह भी कहा जाता है कि महिलाओं का कोई अपना विशेष इतिहास नहीं होता, इतिहास उसी का होता है जो अपना निर्णय स्वयं ले सके। बिहार राज्य में अब महिलाएं जीविका दीदी बनकर अपना सामाजिक, आर्थिक विकास कर रही है और अब अपना सामाजिक, राजनीतिक दृष्टिकोण का विकास करते हुए पारिवारिक, सामाजिक निर्णय लेने में न केवल सक्षम हो रही है अपितु अपने परिवार, समाज का नेतृत्व कर रही है। जीविका दीदी मिशन द्वारा न केवल ग्रामीण समाज के जीवन स्तर में विकास, उत्कर्ष हो रहा है अपितु गांवों की महिलायें भी अपनी विशेष पहचान बनाने में सक्षम हो रही है। महिलाओं की पहचान या परिचय अमुक के संबंध से जोड़कर नहीं देखा जा रहा है, वह अब अपने नाम, अपनी आर्थिक गतिविधियों व अपने स्वयं सहायता समूह के द्वारा जानी जा रही है, पहचानी जा रही है और घर की चार दीवारी तक सीमित न होकर अपने ग्राम के विकास में अपना योगदान दे रही है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जीविका दीदी अभियान ने महिलाओं के कार्यक्षमता व कार्यदक्षता में अभूतपूर्व बदलाव लाया है, जीविका दीदी एक सशक्त दीदी बनकर समाज में उभरी है। माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने कहा कि जीविका दीदियां बिहार की पहचान बन रही हैं और उनके उत्पादों को देशभर में नई पहचान मिल रही है। इस बारे में कहा गया है -

स्वयं सहायता से आत्मविश्वास जगा।
जीविका दीदी ने इतिहास रचा।
आर्थिक बल, सम्मान की पहचान,
नारी शक्ति से बदला बिहार का मान।

प्रलयंकर सिंह
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

राष्ट्र वंदना का शाश्वत गीत

'वंदे मातरम्' : 150 वां वर्ष

कहा जाता है कि भक्ति बिना अवलम्बन की नहीं हो सकती उसी तरह राष्ट्र चेतना, राष्ट्र वंदना या राष्ट्र प्रेम के लिए एक सम्यक बिम्ब, प्रतीक अथवा संवेदनात्मक रूपक की जरूरत महसूस होती है और इसी आत्म सम्मान व राष्ट्र गौरव एवं शाश्वत राष्ट्रीय चेतना की रागात्मक संगीत के रूप में 'वंदे मातरम्' को न केवल स्मरण किया जाना अपितु आत्मसात किया जाना विकसित भारत बनने की प्रक्रिया में निश्चित रूप से प्रेरणा स्रोत माना जा सकता है। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत स्वतंत्रता संघर्ष में ऊर्जा, एकता और त्याग की प्रेरणा बना। यह गीत बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी के उपन्यास आनंदमठ (1882) का हिस्सा है। उपन्यास में इसे सन्यासी क्रांतिकारी गाते हैं।

भारत के राष्ट्रीय जागरण की जिस यात्रा ने स्वतंत्रता संग्राम को जन-आंदोलन का रूप दिया, उस पूरी धारा के केंद्र में यदि किसी एक गीत की आत्मा स्पंदित होती है, तो वह है 'वंदे मातरम्'। यह केवल दो शब्दों का संबोधन नहीं, बल्कि एक पूरे युग की चेतना, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक स्वाभिमान का घोष है। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत उस दौर में सामने आया था जब उपनिवेशवादी शासन भारतीय मन को दमन और निराशा के जाल में बाँधने का प्रयास कर रहा था। ऐसे समय में इस गीत ने लोगों के भीतर 'मां-भूमि' के लिए समर्पण, त्याग और संघर्ष की ज्योति प्रज्वलित कर दी। यह आश्चर्य नहीं कि स्वतंत्रता सेनानियों की सभाओं से लेकर गुप्त क्रांतिकारी बैठकों तक - 'वंदे मातरम्' एक संकेत, प्रेरणा और संकल्प का साझा सूत्र बन गया।

आज जब भारत 21वीं सदी के मोड़ पर नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर है, तब यह आवश्यक है कि 'वंदे मातरम्' को केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही न देखा जाए। यह गीत हमें यह याद दिलाता है कि राष्ट्र केवल सीमाओं, नदियों और पर्वतों का नाम नहीं; यह उन करोड़ों नागरिकों की सामूहिक चेतना है जो अपनी मेहनत, नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठा से देश को आगे बढ़ाते हैं। समय के साथ देश की चुनौतियाँ बदलती हैं, लेकिन राष्ट्रीय भावना की आवश्यकता कभी कम नहीं होती। जब वैश्विक प्रतिस्पर्धा तीव्र है, सामाजिक विविधताओं के बीच सामंजस्य की जरूरत बढ़ी है, और विकास के नए मानदंड गढ़े जा रहे हैं, तब 'वंदे मातरम्' का संदेश हमें फिर प्रेरित करता है कि हमारा हर प्रयास राष्ट्र की

उन्नति में योगदान होना चाहिए।

'वंदे मातरम्' का उच्चारण केवल एक परंपरा का निर्वाह नहीं; यह कर्तव्यबोध, आस्था और देशहित की निरंतर स्मृति है। यह हमें स्मरण दिलाता है कि मातृभूमि के प्रति प्रेम का सबसे सशक्त रूप है - ईमानदार कार्य, सामाजिक सद्भाव और भविष्य के निर्माण में सक्रिय भागीदारी। वास्तव में 'वंदे मातरम्' शाश्वत राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है जिसे अंगीकार कर हम अपने राष्ट्र विकास के समग्र विकास में सहयोग व अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हैं, राष्ट्र निर्माण में अपना बेहतर योगदान करने के लिए प्रतिबद्ध होते है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'वंदे मातरम्' की अर्थवत्ता जागरूक व दायित्वपूर्ण नागरिक बनकर देश सेवा के प्रति समर्पित रहना है। सच्चाई यह है कि 'वंदे मातरम्' बेहतर भारत विकसित भारत, समृद्ध भारत बनने की प्रक्रिया में उर्जा स्रोत है।

लेकिन आज 21वीं सदी में, 'वंदे मातरम्' को एक नए दृष्टिकोण से समझना और प्रस्तुत करना आवश्यक है, ताकि यह सिर्फ इतिहास नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य का प्रेरक बन सके।

1. सांस्कृतिक प्रतीक व प्रेरक भाव

'वंदे मातरम्' मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता का भाव है। वास्तव में मातृभूमि प्रेम भावना सिर्फ राष्ट्रभक्ति नहीं, बल्कि कर्तव्य, नैतिकता और उत्तरदायित्व से जुड़ जाता है। देश को स्वच्छ, सुरक्षित और सक्षम बनाना, सामाजिक समरसता बढ़ाना नागरिक के रूप में सकारात्मक योगदान देना वंदे मातरम गीत के प्रेरक तत्व है।

2. ऐतिहासिक महत्व का आधुनिक संदर्भ

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान 'वंदे मातरम्' ने युवा क्रांतिकारियों में उत्साह भरा, जनसभाओं में एकता जगाई, शिक्षा संस्थानों व आंदोलनों में नया जोश पैदा किया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसे नागरिक सेवा सुशासन, नवाचार, आत्मनिर्भर भारत से जोड़कर देखा जा सकता है।

3. विविधता में सम्मान - 'वंदे मातरम्' का समकालीन अर्थ

हमारा भारत विविधताओं वाला देश है। इस संदर्भ में 'वंदे मातरम्' को समझने की जरूरत है। समावेशिक प्रवृत्ति से हर समुदाय के सम्मान के साथ एक साझा राष्ट्रीय भावना के रूप में यह गीत किसी एक समूह का नहीं; यह पूरे भारत का भाव है। एक ऐसा भाव जो साझा पहचान और साझा भविष्य की बात करता है। भारतीय मानव समाज के समग्र कल्याण व सम्मान में वंदे मातरम को देखा जाना चाहिए।

4. युवाओं के लिए 'वंदे मातरम्' - नया अर्थ, नई ऊर्जा

आज की पीढ़ी के लिए 'वंदे मातरम्' केवल देशभक्ति का गीत नहीं, बल्कि यह संदेश है कि देश की प्रगति में सक्रिय भूमिका निभाएँ तकनीकी, नवाचार और कौशल का विकास करें समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाएँ। यह गीत डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, ग्रीन इंडिया जैसे प्रयासों से भी जुड़ता है, जहाँ युवा ही परिवर्तन के वाहक हैं।

5. भावनात्मक से व्यावहारिक - कर्तव्य की ओर संकेत

'वंदे मातरम्' कहने का अर्थ है- मैं माँ को नमन करता हूँ और उसके विकास के लिए प्रयासरत रहूँगा।

इस भाव को आधुनिक संदर्भ में जोड़कर देखा जाए तो यह संदेश देता है:

ईमानदारी से कार्य करना, समाज सेवा में भाग लेना, संसाधनों का संरक्षण, पर्यावरण की रक्षा, राष्ट्रहित को प्राथमिकता देना।

भारतीय बैंकिंग उद्योग में थर्ड पार्टी प्रोडक्ट (TPP) का योगदान

कन्हैया चौधरी
प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

1. **गैर-ब्याज आय में वृद्धि (Non-Interest Income)** थर्ड पार्टी प्रोडक्ट जैसे बीमा, म्यूचुअल फंड, पेंशन आदि से बैंकों को कमीशन आधारित आय प्राप्त होती है। इससे बैंक केवल ब्याज आय पर निर्भर नहीं रहते और उनकी लाभप्रदता में स्थिरता आती है।
2. वित्तीय समावेशन को बढ़ावा TPP के माध्यम से बैंक बीमा, पेंशन और निवेश उत्पाद ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों तक पहुँचाते हैं, जिससे देश में वित्तीय साक्षरता और समावेशन को बल मिलता है।
3. ग्राहक-केंद्रित बैंकिंग को मजबूती ग्राहकों को एक ही स्थान पर बैंकिंग + बीमा + निवेश समाधान मिलने से उनकी सुविधा बढ़ती है और बैंक–ग्राहक संबंध दीर्घकालिक एवं मजबूत होते हैं।
4. जोखिम में विविधता (Risk Diversification) थर्ड पार्टी प्रोडक्ट से अर्जित आय में कोई क्रेडिट रिस्क नहीं होता, जिससे बैंक का कुल जोखिम प्रोफाइल संतुलित रहता है।
5. भारतीय अर्थव्यवस्था में पूंजी निर्माण म्यूचुअल फंड, पेंशन और बीमा उत्पादों के माध्यम से घरेलू बचत का निवेश में रूपांतरण होता है, जिससे पूंजी बाजार और आर्थिक विकास को गति मिलती है।
6. क्रॉस-सेलिंग और प्रति ग्राहक आय में वृद्धि बैंक अपने मौजूदा ग्राहक आधार को उपयुक्त TPP प्रदान कर प्रति ग्राहक आय (Revenue per Customer) बढ़ाते हैं।
7. बैंक शाखाओं के प्रदर्शन में सुधार TPP लक्ष्य आधारित उत्पाद होने के कारण:
   - शाखा की उत्पादकता बढ़ती है
   - कर्मचारियों की सेल्स स्किल में सुधार होता है
   - प्रदर्शन मूल्यांकन (Performance Appraisal) बेहतर होता है
8. नियामकीय ढांचे को मजबूती RBI, IRDAI और SEBI के दिशा-निर्देशों के अंतर्गत TPP की बिक्री से:
   - पारदर्शिता बढ़ती है
   - मिस-सेलिंग में कमी आती है
   - ग्राहक संरक्षण सुनिश्चित होता है
9. डिजिटल बैंकिंग को प्रोत्साहन TPP की डिजिटल बिक्री (ऑनलाइन MF, डिजिटल इंश्योरेंस) से:
   - डिजिटल अपनाने में वृद्धि
   - परिचालन लागत में कमी
   - तेज और पारदर्शी सेवाएँ

बैंकिंग उद्योग का सतत विकास: थर्ड पार्टी प्रोडक्ट भारतीय बैंकिंग प्रणाली को लाभदायक, स्थिर और ग्राहक-केन्द्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
निष्कर्ष:- थर्ड पार्टी प्रोडक्ट भारतीय बैंकिंग उद्योग की रीढ़ बन चुके हैं, जो न केवल बैंकों की आय बढ़ाते हैं, बल्कि वित्तीय समावेशन, पूंजी निर्माण और आर्थिक विकास में भी अहम योगदान देते हैं।

भारत–रूस–चीन संबंधों का विकसित होता स्वरूप : सहयोग, प्रतिस्पर्धा और रणनीतिक संतुलन

अवकाश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

भारत, रूस और चीन के बीच संबंध एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं, जो वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव, क्षेत्रीय सुरक्षा चिंताओं और आर्थिक पुनर्संरेखण से प्रभावित हैं। शीत युद्ध काल की विचारधाराओं और द्विपक्षीय साझेदारियों से आगे बढ़ते हुए, आज ये तीनों देश सहयोग और प्रतिस्पर्धा के जटिल मिश्रण के साथ एक बदलते हुए अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और रणनीतिक संदर्भ

भारत और रूस के बीच संबंध ऐतिहासिक रूप से मजबूत और भरोसेमंद रहे हैं, जिनकी नींव रक्षा सहयोग, कूटनीतिक समर्थन और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पारस्परिक सहयोग पर आधारित है। वहीं, रूस और चीन के संबंध पिछले दो दशकों में और सशक्त हुए हैं, जिनका प्रमुख कारण पश्चिमी वर्चस्व को संतुलित करने और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देने की साझा सोच है। इसके विपरीत, भारत और चीन के संबंध अपेक्षाकृत जटिल रहे हैं, जिन पर सीमा विवाद और एशिया में रणनीतिक प्रतिस्पर्धा की छाया बनी हुई है। इन द्विपक्षीय संबंधों की प्रकृति ही त्रिपक्षीय समीकरण को आकार देती है। आरआईसी (रूस–भारत–चीन) और ब्रिक्स जैसे मंच संवाद के अवसर प्रदान करते हैं, जहाँ वैश्विक शासन, विकास और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में सुधार जैसे मुद्दों पर सहयोग पर बल दिया जाता है।

साझा हितों का अभिसरण

तीनों देशों के बीच एक प्रमुख साझा उद्देश्य बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की स्थापना है। भारत, रूस और चीन पश्चिम-प्रभुत्व वाली प्रणालियों पर निर्भरता कम करना चाहते हैं और वैश्विक निर्णय प्रक्रिया में उभरती अर्थव्यवस्थाओं की भूमिका बढ़ाने के पक्षधर हैं। ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन (SCO) और जी-20 जैसे मंचों पर उनका सहयोग इसी दिशा को दर्शाता है।

ऊर्जा सुरक्षा भी सहयोग का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। तेल, गैस और परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में रूस के साथ भारत और चीन के संबंध उल्लेखनीय हैं।

मतभेद और चुनौतियाँ

साझा हितों के बावजूद, यह त्रिपक्षीय संबंध पूरी तरह सहज नहीं है। भारत–चीन संबंधों में तनाव, विशेषकर वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) से जुड़े मुद्दों ने क्षेत्रीय सहयोग में सावधानी और अविश्वास को जन्म दिया है। भारत दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को लेकर सतर्क है, जबकि चीन भारत के पश्चिमी देशों के साथ बढ़ते रणनीतिक संबंधों पर नज़र रखता है।

रूस इस समीकरण में संतुलन बनाए रखने की कोशिश करता है। एक ओर चीन के साथ उसके संबंध मजबूत हुए हैं, वहीं दूसरी ओर वह भारत के साथ अपनी दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी-विशेषकर रक्षा और कूटनीति के क्षेत्र में-को भी अत्यंत महत्वपूर्ण मानता है।

रणनीतिक स्वायत्तता और संतुलन नीति

भारत की विदेश नीति का मूल आधार रणनीतिक स्वायत्तता है। भारत रूस और चीन के साथ उन क्षेत्रों में सहयोग करता है जहाँ उसके हित मेल खाते हैं, साथ ही अन्य वैश्विक साझेदारों के साथ भी अपने संबंध मजबूत करता है। इससे वह किसी भी कठोर गठबंधन में बँधे बिना अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर पाता है।

चीन त्रिपक्षीय सहयोग को क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने और पश्चिमी दबाव का संतुलन करने के साधन के रूप में देखता है, जबकि रूस एशिया में अपनी प्रासंगिकता और प्रभाव बनाए रखने के लिए भारत और चीन-दोनों से संबंध संतुलित रखने का प्रयास करता है।

भविष्य की दिशा

भारत–रूस–चीन संबंधों का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि ये देश अपने मतभेदों को कितनी व्यावहारिकता से संभाल पाते हैं। बहुपक्षीय मंचों, वैश्विक आर्थिक शासन और कुछ रणनीतिक क्षेत्रों में सहयोग जारी रहने की संभावना है, किंतु विशेषकर भारत और चीन के बीच गहरे विश्वास की कमी बनी रह सकती है।

संक्षेप में, भारत–रूस–चीन संबंध न तो पूरी तरह सहयोगात्मक हैं और न ही टकरावपूर्ण। यह एक गतिशील और विकसित होती हुई साझेदारी है, जो आने वाले वर्षों में एशियाई भू-राजनीति और वैश्विक शक्ति संतुलन को प्रभावित करेगी।

जन सुरक्षा योजना : एक अवलोकन

राहुल पराशर
व. प्रबंधक
अं.का. पटना

भारत सरकार की जन सुरक्षा योजनाएं देश के हर नागरिक, विशेषकर आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को वित्तीय मुख्यधारा से जोड़ने और उन्हें आर्थिक कवच प्रदान करने का एक क्रांतिकारी प्रयास हैं। वित्तीय समावेशन योजनाओं का ढांचा चार मुख्य स्तंभों पर टिका है:

प्रधानमंत्री जन-धन योजना : यह दुनिया की सबसे बड़ी वित्तीय समावेशन योजना है। इसका उद्देश्य हर परिवार का शून्य बैलेंस बैंक खाता खोलना है। इसके साथ ही खाताधारकों को मुफ्त रुपये डेबिट कार्ड और ₹10,000 तक की ओवरड्राफ्ट सुविधा मिलती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसी खाते के जरिए अन्य सभी बीमा और पेंशन योजनाओं का लाभ सीधे डीबीटी के माध्यम से मिलता है।

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना : यह एक दुर्घटना बीमा योजना है। सभी खाताधारक जिनकी उम्र 18 वर्ष से 70 वर्ष है, वे इस योजना का लाभ ले सकते है। केवल ₹20 प्रति वर्ष के प्रीमियम पर, दुर्घटना में मृत्यु/ पूर्ण या आंशिक विकलांगता होने पर ₹2 लाख की सहायता राशि दी जाती है।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना : यह जीवन बीमा योजना 18 से 50 वर्ष के समस्त खाताधारकों के लिए उपलब्ध है। इसमें ₹436 के वार्षिक प्रीमियम जमा करने पर बीमाधारक की किसी भी प्रकार से मृत्यु की स्थिति में उसके नॉमिनी को ₹2 लाख का कवर मिलता है।

अटल पेंशन योजना : यह योजना वृद्धावस्था की सुरक्षा के लिए है। इसमें निवेश के आधार पर 60 वर्ष की आयु के बाद ₹1,000 से ₹5,000 तक की मासिक पेंशन की गारंटी दी जाती है।

जन धन खाता वह प्रवेश द्वार है जिसने बैंकिंग सेवाओं को गरीब के दरवाजे तक पहुँचाया है, जबकि अन्य योजनाएं उन्हें जीवन के जोखिमों से बचाती हैं। साथ मिलकर ये योजनाएं एक आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और सुरक्षित भारत का निर्माण कर रही हैं।

ये योजनाएं सीधे बैंक खातों से जुड़ी होती हैं, जिससे प्रीमियम जमा करना और लाभ प्राप्त करना बेहद सरल और पारदर्शी हो जाता है। "सबका साथ, सबका विकास" के मंत्र को सिद्ध करते हुए, ये योजनाएं करोड़ों भारतीयों के भविष्य को सुरक्षित बना रही हैं।

जन सुरक्षा योजना

सुरक्षा का विश्वास, हर घर की शान,
दुर्घटना में बने ढाल, जीवन का वरदान।
थोड़े से प्रीमियम में बड़ा सहारा,
जन-जन को दे सुरक्षित भविष्य का उजियारा।

इंड शक्ति
जीवन के हर मोड पर, प्रत्येक
महिला के लिए एक विशेष बचत खाता

अधिक जानकारी
के लिए स्कैन करें

दीपक कुमार
प्रबंधक
अं.का. पटना

बैंकिंग क्षेत्र एवं सतर्कता के विविध आयाम

सतर्कता का मतलब सचेत रहकर, तयशुदा नियमों के अनुसार पूरी जिम्मेदारी व जवाबदेही से अपने कार्य का निष्पादन करना ताकि कोई गलती, अनियमितता या दुरूपयोग न हो। सतर्कता का उद्देश्य दंड नहीं, बल्कि गलती रोकना और व्यवस्था को सही, चुस्त, पारदर्शी व विश्वसनीय बनाये रखना है।

वास्तव में सतर्कता क्या है .. इसे समझने की जरूरत है –

- अपने कर्मचारियों के कार्यों एवं वित्तीय लेन-देन की निगरानी।
- अनियमितता, लापरवाही, भ्रष्टाचार या धोखाधड़ी का संज्ञान लेना।
- संस्था के नियमों एवं दिशानिर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करना।
- निवारक एवं सुधारात्मक कार्रवाई करना।

सतर्कता की आवश्यकता

- भ्रष्टाचार रोकने के लिए धोखाधड़ी रोकने एवं अनैतिक कार्यों पर नियंत्रण करने के लिए नियमों का अनुपालन सुनिश्चित हेतु।
- संस्था के नियम-निर्देशों के अनुसार समस्त स्टाफ सदस्यगण कार्य करें।
- आर्थिक नुकसान से बचाव के लिए। धोखाधड़ी से होने वाले अनियमित भुगतान को समय रहते रोका जा सके।
- जवाबदेही तय करने के लिए। लापरवाही या अनियमितता की स्थिति में जिम्मेदारी तय की जाती है।
- अनुशासन बनाए रखने के लिए। स्टाफ सदस्यगण में कार्य के प्रति सतर्कता और अनुशासन बना रहता है।
- भविष्य में गलतियों की पुनरावृत्ति की रोकथाम के लिए।
- कानूनी एवं नियामकीय अनुपालन के लिए।

सतर्कता का अनुपालन कैसे किया जाए

- नियमों की पूरी जानकारी रखना। बैंक के परिपत्र, मैनुअल एवं एसओपी से स्वयं को नियमित रूप से अपडेट रखा जाए।
- अपने कार्य के निष्पादन में सतर्कता बरतें। हर कार्य को जरूरी एवं ध्यान से उपलब्ध दस्तावेजों को जांच करके कार्य किया जाए। जल्दबाजी या दबाव में कोई भी

निर्णय लेने से बचा जाए।

- अपने कार्य को ईमानदारी, सत्यनिष्ठा व पारदर्शी के साथ किया जाए।
- अनियमितता को नजर अंदाज न करके उसे रिपोर्ट एवं उस पर कार्रवाही करके।
- व्यक्तिगत लाभ या मोह से दूरी बनाकर। नेक नियत के बावजूद नियमों का पालन करते हुए।

सतर्कता के प्रकार

1. निवारक सतर्कता – इसका उद्देश्य गलत कार्य या अनियमितता होने से पहले ही उसे रोकना है।
2. खोजी सतर्कता – अनियमितता या पहले से हो चुकी त्रुटियों का पता लगाना। यह निरीक्षण, ऑर्डर, जाँच आदि के माध्यम से किया जाता है जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि बैंकिंग कार्य नियमों के अनुरूप किए गए है।
3. दंडात्मक सतर्कता – जब जांच में दोष सिद्ध हो जाता है तब अभियुक्त अधिकारी या कर्मचारी के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाती है। इसका उद्देश्य भविष्य में ऐसी गलतियों की पुनरावृत्ति को रोकना है।

बैंक में नियमों, अनुदेशों एवं निर्देशों का अनुपालन अत्यंत ही आवश्यक है क्योंकि बैंक एक वित्तीय संस्थान है जिसमें जनता का धन जमा होता है। यदि बैंकिंग कार्यों में सतर्कता नहीं बरती जाती, तो इससे न केवल जनता का विश्वास कम होता है, अपितु बैंक की साख और प्रतिष्ठा भी प्रभावित होती है।

ध्यातव्य है कि केंद्रीय सतर्कता आयोग के दिशानिर्देशानुसार प्रत्येक वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह का अनुपालन किया जाता है। इसका उद्देश्य जनता एवं समस्त कर्मियों के बीच भ्रष्टाचार व धोखाधड़ी के विरूद्द जागरूकता फैलाना, पारदर्शिता और नैतिक कार्य संस्कृति की भावना विकसित करना है। इस दौरान सतर्कता शपथ, जागरूकता कार्यक्रम, वॉकथन का आयोजन जैसे विविध गतिविधियों के द्वारा सामान्य जनता को जागरूक करना है।

ऐ जिंदगी

उलझनों और कश्मकश में,
उम्मीद की ढाल लिए बैठा हूँ,
ऐ जिंदगी..
तेरी हर चाल के लिए,
मैं दो चाल लिए बैठा हूँ,
लुत्फ़ उठा रहा हूँ मैं भी,
आँख-मिचोली का,
मिलेगी कामयाबी,
हौसला कमाल का लिए बैठा हूँ,
चल मान लिया,
दो-चार दिन नहीं,
मेरे मुताबिक़,
गिरेबान में अपने,
ये सुनहरा साल लिए बैठा हूँ,
ये गहराइयां, ये लहरें,
ये तूफां तुम्हे मुबारक,
मुझे क्या फ़िक्र,
मैं कश्तियां और दोस्त,
बेमिसाल लिए बैठा हूँ..!
ऐ जिंदगी.....

संतोष कुमार
सी.एस.ए
ए.पी.एम.सी शाखा, हाजीपुर

प्रियेश कुमार
प्रबंधक
अं.का. पटना

भारत के विकास में प्रवासी भारतीयों (NRIs) का योगदान

भारत के विकास में प्रवासी भारतीयों (NRIs) का योगदान एक ऐसी कहानी है जो सीमाओं से परे जाकर अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम और कर्तव्य को दर्शाती है। आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, और इस सफर में हमारे प्रवासी भाइयों और बहनों ने "मजबूत स्तंभ" की भूमिका निभाई है। भारत के विकास के 'अदृश्य' सारथी प्रवासी भारतीय यानी NRI केवल वे लोग नहीं हैं जो विदेशों में बस गए हैं, बल्कि वे भारत के सांस्कृतिक राजदूत और आर्थिक शक्ति भी हैं।

भारत दुनिया में सबसे ज्यादा 'रेमिटेंस' (विदेशों से भेजा गया धन) प्राप्त करने वाला देश है। वर्ष 2024-25 के आंकड़ों के अनुसार, प्रवासियों ने लगभग 129 बिलियन डॉलर भारत भेजे हैं। यह पैसा न केवल परिवारों की मदद करता है, बल्कि भारत के विदेशी मुद्रा भंडार (Foreign Exchange Reserves) को भी मजबूत बनाता है, जिससे भारतीय रुपया स्थिर रहता है।

निवेश और उद्यमिता NRIs अब केवल पैसे ही नहीं भेज रहे, बल्कि वे भारत के स्टार्टअप्स, रियल एस्टेट और शेयर बाजार में भारी निवेश कर रहे हैं। वे सिलिकॉन वैली जैसी जगहों से तकनीक और 'बेस्ट प्रैक्टिसेज' भारत लाते हैं, जिससे यहाँ नवाचार को बढ़ावा मिलता है। एक समय था जब माना जाता था कि भारत की प्रतिभा विदेश जा रही है। लेकिन आज वही प्रतिभा 'ब्रेन गेन' में बदल गई है। सुंदर पिचाई (Google) और सत्य नडेला (Microsoft) जैसे दिग्गज आज वैश्विक स्तर पर भारत की छवि को निखार रहे हैं, जिससे विदेशी कंपनियां भारत में निवेश करने के लिए प्रेरित होती हैं। सॉफ्ट पावर और कूटनीति दुनिया के हर कोने में भारतीय समुदाय की उपस्थिति भारत की विदेश नीति को मजबूती देती है। चाहे अमेरिका हो या ब्रिटेन, वहां के राजनीतिक निर्णयों में भारतीयों का प्रभाव भारत के हितों की रक्षा करने में मदद करता है। प्रमुख प्रेरणादायक विचार "आप एक भारतीय को भारत से बाहर निकाल सकते हैं, लेकिन उसके दिल से भारत को कभी बाहर नहीं निकाल सकते।" "प्रवासी भारतीय भारत की प्रगति के वे दूत हैं, जो सात समंदर पार रहकर भी अपनी जड़ों को सींचना नहीं भूलते।"

निष्कर्ष : भारत के 'विकसित भारत और आर्थिक शक्ति' के सपने को सच करने में NRIs की भूमिका अनिवार्य है। वे केवल निवेशक नहीं, बल्कि हमारी साझा विरासत और भविष्य के साझेदार हैं।

वर्तमान समय में बैंकिंग जगत में अनुपालन (Compliance) का महत्त्व

शशि कुमार पाल
व. प्रबंधक
अं.का. पटना

अनुपालन कार्य का दायित्व यह सुनिश्चित करना है कि समय-समय पर विभिन्न वैधानिक एवं अन्य नियामकों द्वारा निर्धारित सभी वैधानिक, नियामकीय तथा अन्य प्रावधानों एवं अनुपालनों का कड़ाई से पालन किया जाए। इसमें निम्नलिखित बिन्दुये शामिल हैं:

- वैधानिक एवं नियामकीय प्रावधान
- नियामकों द्वारा जारी दिशानिर्देश
- उद्योग संघों द्वारा निर्धारित फेयर प्रैक्टिस कोड
- बैंक की आंतरिक नीतियाँ एवं प्रक्रियाएँ

बैंकों मे अनुपालन केवल कानूनी बाध्यताओं तक सीमित नहीं होते, बल्कि ईमानदारी, नैतिक आचरण और उच्च सत्यनिष्ठा के व्यापक मानकों को भी अपनाते हैं। जब कोई बैंक लागू नियामकीय या वैधानिक नियमों या निर्धारित आचार संहिता का पालन करने में विफल रहता है, तो गंभीर अनुपालन जोखिम (Compliance Risk) का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान समय का बैंकिंग वातावरण अत्यंत जटिल, पारदर्शी और उत्तरदायी हो गया है। बदलती आर्थिक परिस्थितियाँ, डिजिटल बैंकिंग का विस्तार, साइबर जोखिम, तथा नियामकीय अपेक्षाओं में निरंतर वृद्धि ने अनुपालन (Compliance) को बैंकिंग व्यवस्था का एक केन्द्रीय स्तंभ बना दिया है।

1. नियामकीय नियंत्रण और विश्वास की नींव : बैंकिंग प्रणाली पूरी तरह से नियामक निकायों के दिशा निर्देशों पर आधारित होती है। यह अनुपालन सुनिश्चित करता है कि:

- बैंक सभी कानूनों, नियमों और विनियमों का पालन करें;
- जमाकर्ताओं और निवेशकों का विश्वास बना रहे;
- वित्तीय प्रणाली में स्थिरता और विश्वसनीयता बनी रहे।

2. धोखाधड़ी एवं भ्रष्टाचार की रोकथाम : हाल के वर्षों में बैंकिंग क्षेत्र में, फ्रॉड, साइबर अपराध, आंतरिक अनियमितताएँ तेजी से सामने आई हैं। जिसके रोकथाम के लिए मजबूत अनुपालन प्रणाली का होना अति आवश्यक है यथा धोखाधड़ी की शीघ्र पहचान, जोखिमों का पूर्व आंकलन एवं जवाबदेही तय करना।

3. डिजिटल बैंकिंग और साइबर सुरक्षा : आज बैंकिंग तेजी से डिजिटल और तकनीक आधारित हो गई है जिसमे इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, UPI / API आधारित सेवाएँ मुख्य है। इनसे जुड़े डेटा प्राइवेसी, साइबर सुरक्षा, और तकनीकी अनुपालन अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गया है। अनुपालन के बिना ग्राहक डेटा जोखिम में पड़ सकता है तथा बैंक की साख को गंभीर नुकसान हो सकता है।

4. एंटी मनी लॉन्ड्रिंग (AML) एवं KYC : वैश्विक स्तर पर आतंकवाद की फंडिंग और काले धन पर रोक लगाने हेतु, KYC, AML, CTF (Counter Terror Financing) नियमों का सख़्ती से पालन अनिवार्य है एवं इसके अनुपालन से अनुपालन बैंक को भारी जुर्माने, अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों एवं प्रतिष्ठा हानि से बचाव मिलता है।

5. आंतरिक अनुशासन एवं जवाबदेही : अनुपालन केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि नैतिक आचरण, कर्मचारी उत्तरदायित्व एवं संचालन में पारदर्शिता को भी बढ़ावा देता है। इससे बैंकों मे सभी निर्णय नीति आधारित, व्यक्तिगत

विवेकाधिकार सीमित एवं संगठनात्मक संस्कृति स्वस्थ से बनी रहती है।

6. दंडात्मक कार्रवाई और प्रतिष्ठा जोखिम : अनुपालन न होने की स्थिति में बंकों पर जुर्माना, विभागीय/विधिक कार्यवाही, बैंक की ब्रांड वैल्यू में गिरावट

हो सकती है। आज के सोशल मीडिया और सूचना के युग में प्रतिष्ठा जोखिम (Reputational Risk) सबसे बड़ा खतरा है, जिसे अनुपालन ही नियंत्रित कर सकता है।

7. सतत विकास और दीर्घकालिक स्थिरता : मजबूत अनुपालन ढांचा, बेहतर कॉरपोरेट गवर्नेंस, दीर्घकालिक लाभ, ग्राहक केंद्रित सेवाएँ को सुनिश्चित करता है।

अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु हमारे बैंक द्वारा उठाए गए उपाय :

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभाग द्वारा विभिन्न उपाय अपनाए जा रहे हैं, जिनमें शामिल हैं:

- नए उत्पाद का परीक्षण (New Product Testing)
- ट्रांश परीक्षण (Tranche Testing)
- थीमैटिक परीक्षण (Thematic Testing)
- ऑनसाइट परीक्षण (Onsite Testing)
- ऑफसाइट परीक्षण एवं निगरानी (Offsite Testing & Monitoring)

कम्प्लायंस टेस्टिंग :

1. ऑनलाइन अनुपालन प्रमाणन (NICE – Normalised Individual Compliance Evaluator) NICE पोर्टल के माध्यम से प्रत्येक अधिकारी द्वारा भूमिका-आधारित अनुपालन का ऑनलाइन स्व-प्रमाणन त्रैमासिक आधार पर किया जाता है। स्व-प्रमाणन के लिए अनुपालन मापदंड (सांविधिक, नियामकीय तथा आंतरिक) बैंक के सभी अधिकारियों को उनके भूमिका के आधार पर व्यक्तिगत स्तर पर आवंटित किए जाते हैं। यह एप्लिकेशन समयबद्ध स्व-रिपोर्टिंग में सहायता करता है तथा प्रदर्शन प्रबंधन प्रणाली (PMS) के अंतर्गत इकाई एवं व्यक्तिगत स्तर पर अनुपालन स्कोरकार्ड तैयार करने और बार-बार होने वाले अनुपालनों की कमी के लिए लक्षित सुधारात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करता है।
2. ऑफसाइट पर्यवेक्षण –ऑफसाइट पर्यवेक्षण ATOM (एडवांस्ड टूल फॉर ऑफसाइट मॉनिटरिंग) के माध्यम से किया जाता है, जो एक प्रभावी नियामकीय दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिससे बैंक द्वारा सामना किए जा रहे जोखिमों की पहचान एवं विश्लेषण किया जा सके। यह निम्नलिखित के अनुरूप कार्य करता है:

- नियामकीय एवं वैधानिक दिशानिर्देश
- बैंक की आंतरिक नीतियाँ
- सर्वोत्तम बैंकिंग प्रथाएँ

यह प्रणाली एक अर्ली वार्निंग सिस्टम विकसित करती है, जिससे जोखिमों के प्रभाव को कम करने हेतु पूर्व निवारक उपाय किए जा सकें तथा बैंक की सुदृढ़ता एवं स्थिरता सुनिश्चित हो।

विभिन्न नियामकीय/वैधानिक/आंतरिक नीति आधारित दिशानिर्देशों के अनुपालन की गुणवत्ता में सुधार करने तथा डेटा की शुद्धता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से ऑफसाइट परीक्षण एवं निगरानी प्रणाली को मैनुअल प्रक्रिया से स्वचालित (ऑटोमेटेड) प्रणाली में परिवर्तित किया गया है।

निष्कर्ष : वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य में अनुपालन कोई औपचारिक प्रक्रिया मात्र नहीं, बल्कि बैंक की साख, सुरक्षा, विश्वसनीयता और सतत अस्तित्व का आधार है। अक्सर अनुपालक नियमों की अवहेलनाओ के कारण कर्मचारी को व्यक्तिगत दायित्व (Personal Liability) को झेलना पड़ता है। यदि हम इसे दुरुस्त रखे तो यह हमारे लिए 'सुरक्षा कवच' या 'सुरक्षात्मक ढाल' (Protective Shield) का काम करेगी।

एक मज़बूत, जागरूक और नैतिक अनुपालन संस्कृति ही आधुनिक बैंकिंग की असली ताकत है।

आस्था का महाकुंभ : प्रयागराज 2025 – नए परिप्रेक्ष्य में

पवन कुमार उपाध्याय
मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा)
अंचल कार्यालय, पटना

प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ 2025 भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का एक ऐसा विराट आयोजन रहा, जिसने आस्था, सामाजिक समरसता और आधुनिक प्रशासनिक क्षमता का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया। यह आयोजन न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और प्रबंधन के नए आयामों को भी रेखांकित करता है।

परंपरागत रूप से महाकुंभ आत्मशुद्धि, मोक्ष और आध्यात्मिक साधना का पर्व रहा है। किंतु 2025 के महाकुंभ में करोड़ों श्रद्धालुओं की सहभागिता ने इसे सामूहिक चेतना और राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में स्थापित किया। विविध प्रदेशों, वर्गों और भाषायी समूहों के लोगों का शांतिपूर्ण सहअस्तित्व भारतीय संस्कृति की मूल भावना को प्रतिबिंबित करता है।

नए परिप्रेक्ष्य में महाकुंभ 2025 आधुनिक तकनीक और सुव्यवस्थित प्रशासन का उत्कृष्ट उदाहरण भी बना। भीड़ प्रबंधन, स्वच्छता, सुरक्षा, यातायात तथा डिजिटल सेवाओं के प्रभावी उपयोग ने इस विशाल आयोजन को सुचारु रूप से संपन्न करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आर्थिक दृष्टि से भी महाकुंभ ने स्थानीय व्यापार, पर्यटन, हस्तशिल्प एवं सेवा क्षेत्रों को व्यापक प्रोत्साहन प्रदान किया। इससे क्षेत्रीय विकास और रोजगार सृजन को नई दिशा मिली।

निष्कर्षतः, प्रयागराज महाकुंभ 2025 आस्था से आगे बढ़कर आधुनिक भारत की सांस्कृतिक चेतना, प्रशासनिक दक्षता और सामाजिक एकता का प्रतीक बनकर उभरा। यही इसका समकालीन और व्यापक परिप्रेक्ष्य है।

साइबर धोखाधड़ी से बचाओ

सत्यम श्रीवास्तव
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

आज के डिजिटल युग में जहाँ लेन-देन और संवाद आसान हुआ है, वहीं साइबर धोखाधड़ी (Cyber Fraud) का खतरा भी तेजी से बढ़ा है। साइबर अपराधी मासूम लोगों को ठगने के लिए नए-नए तरीके अपनाते हैं, लेकिन थोड़ी सी सावधानी हमें सुरक्षित रख सकती है।

साइबर धोखाधड़ी से बचने के उपाय

पासवर्ड की सुरक्षा: हमेशा मजबूत और पेचीदा पासवर्ड का उपयोग करें। अपने सोशल मीडिया और बैंक खातों के लिए अलग-अलग पासवर्ड रखें और उन्हें समय-समय पर बदलते रहें।

अज्ञात लिंक से बचें: ईमेल, व्हाट्सएप या एसएमएस पर आए किसी भी संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करें। ये लिंक आपकी निजी जानकारी चुराने या फोन में वायरस डालने के लिए हो सकते हैं।

OTP साझा न करें: बैंक या कोई भी प्रतिष्ठित संस्थान कभी भी आपसे फोन पर OTP (One Time Password), पिन या पासवर्ड नहीं मांगता। इसे किसी के साथ साझा करना आर्थिक नुकसान को दावत देना है।

टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (2FA): अपने महत्वपूर्ण खातों पर 'टू-स्टेप वेरिफिकेशन' चालू करें। इससे सुरक्षा की एक अतिरिक्त परत जुड़ जाती है।

सार्वजनिक वाई-फाई: सार्वजनिक स्थानों पर मुफ्त वाई-फाई का उपयोग करते समय बैंकिंग लेनदेन करने से बचें।

निष्कर्ष: सतर्कता ही बचाव है। यदि आप किसी धोखाधड़ी का शिकार होते हैं, तो तुरंत 1930 पर कॉल करें या cybercrime.gov.in पर अपनी शिकायत दर्ज कराएं।

भारत की अर्थव्यवस्था में एमएसएमई का योगदान

निरंजन कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

भारतीय अर्थव्यवस्था एक मिश्रित अर्थव्यवस्था है जो तेजी से विकसित होने की ओर अग्रसर है। यह सेवा क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भर है। इसके बाद कृषि और उद्योग का स्थान आता है। भारत की अर्थव्यवस्था जापान को पीछे छोड़ते हुए जीडीपी की दृष्टि से विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हाल ही में बनी है।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) भारत की अर्थव्यवस्था का एक जरूरी एवं महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका प्रबंधन सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया जाता है तथा एमएसएमईडी 2006 के तहत इसे परिभाषित किया गया है। ये उद्योग देश की अर्थव्यवस्था के लिए रीढ़ की हड्डी का काम करती है क्योंकि इसके अनुपस्थिति में बड़े उद्योग की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। ये न सिर्फ अर्थव्यवस्था की दृष्टि से महत्वपूर्ण है अपितु रोजगार सृजन के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है। ये वो उद्योग है जो भारत में सबसे ज्यादा रोजगार सृजन करता है। खासकर ग्रामीण क्षेत्र में तो एमएसएमई उद्योग ही रोजगार का मुख्य आधार है।

एमएसएमई की प्रमुख उपलब्धियाँ

- एमएसएमई भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है जो देश के जीडीपी में 30 प्रतिशत का योगदान करता है।
- यह 11 करोड़ से ज्यादा लोगों को रोजगार प्रदान किए हुए है।
- देश के कुल रोजगार सृजन में कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा स्रोत /माध्यम बना हुआ है।
- देश के कुल निर्यात का लगभग 50 प्रतिशत हिस्सा अकेले एम संभाले हुए है।
- एमएसएमई में मुख्यतः ऐसे उद्यम आते है जिसमें बड़े उद्योग की तुलना में अपेक्षाकृत कम पूंजी में बड़े पैमाने पर रोजगार का अवसर सृजन होता है।
- एमएसएमई की उपलब्धि को इससे भी आँका जा सकता है कि चीन जैसे निर्यातक देश के कुल निर्यात में एम का योगदान लगभग 70 प्रतिशत है।

- एमएसएमई इकाईयों ने ग्रामीण क्षेत्र से शहर की ओर होने वाले पलायन को काफी हद तक रोक रखा है क्योंकि उन इन इकाइयों में ग्रामीण क्षेत्र में पारंपरिक कारीगरों एवं समाज के कमजोर वर्ग के लोगों को रोजगार का अवसर प्राप्त हुआ है।
- एमएसएमई स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों का ज्यादातर उपयोग करते है जो कि लागत प्रभावी एवं पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल होता है। ये आर्थिक परिवेश को एक स्थानीय रूप देता है।

ये उपलब्धियाँ अपने आप में एमएसएमई उद्यम का देश के लिए योगदान एवं महत्व को दर्शाता है।

एमएसएमई के समक्ष चुनौतियां

एम को अनेक स्तर पर चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। जैसे –

1. एमएसएमई को उच्च लागत (पूंजी) खासकर भूमि की उपलब्धता में चुनौतीयों का सामना करना पड़ता है।
2. एमएसएमई को बिचौलियों पर निर्भर रहना पड़ता है ताकि वे अपने उत्पाद का समुचित विपणन कर सके।
3. संसाधन की कमी के कारण एम उचित प्रौद्योगिकी का इस्तेमान नहीं कर पाते हैं और इससे इनका विपणन प्रभावित होता है।

इन सभी चुनौतियों का सामना करने हेतु एमएसएमई पूरी तरह से तैयार व सजग हो जाए इसके लिए सरकार भी तरह-तरह की योजनाएं लागू करते रहती है जिससे कि एमएसएमई सर्वांगीण विकास को प्राप्त कर सके।

सरकार भिन्न-भिन्न योजनाएँ जैसे पीएमएमवाई, पीएम विश्वकर्मा, पीएमईजीपी के माध्यम से एमएसएमई के तहत रोजगार सृजन हेतु प्रयास करते रहती है।

2025-26 के यूनियन बजट में भारत सरकार ने एमएसएमई के वर्गीकरण के आधार को परिवर्तित कर उसे एक नया आयाम दिया।

	निवेश (रु. करोड़ में)		टर्नओवर (रु. करोड़ में)	
	पूर्व में	परिवर्तित	पूर्व में	परिवर्तित
सूक्ष्म	1	2.5	5	10
लघु	10	25	50	100
मध्यम	50	125	250	500

नये वर्गीकरण में निवेश को 2.5 गुणा तथा टर्नओवर को 2 गुणा कर दिया गया ताकि एमएसएमई उद्योग के efficiency, technological adaptation एवं employment generation को नये आयाम तक पहुँचाया जा सके।

- सीजीटीएमएसई ने सूक्ष्म लघु उद्योग हेतु गारंटी सीमा को 5 करोड़ से बढ़ाकर 10 करोड़ कर दिया।
- भारत सरकार की मुहिम मेक इन इंडिया एंड मेड इन इंडिया एवं 2047 में विकसित भारत एमएसएमई के बिना हासिल नहीं किया जा सकता है।

इस प्रकार एमएसएमई भारत की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख चालक बन गया है जो कम पूंजी निवेश के साथ उद्यमशीलता को बढ़ावा देता है तथा रोजगार का उल्लेखनीय अवसर सृजित करता है। यह देश के समावेशी औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो कि सहायक इकाई के रूप में बड़े उद्योग को पूर्णता प्रदान करता है।

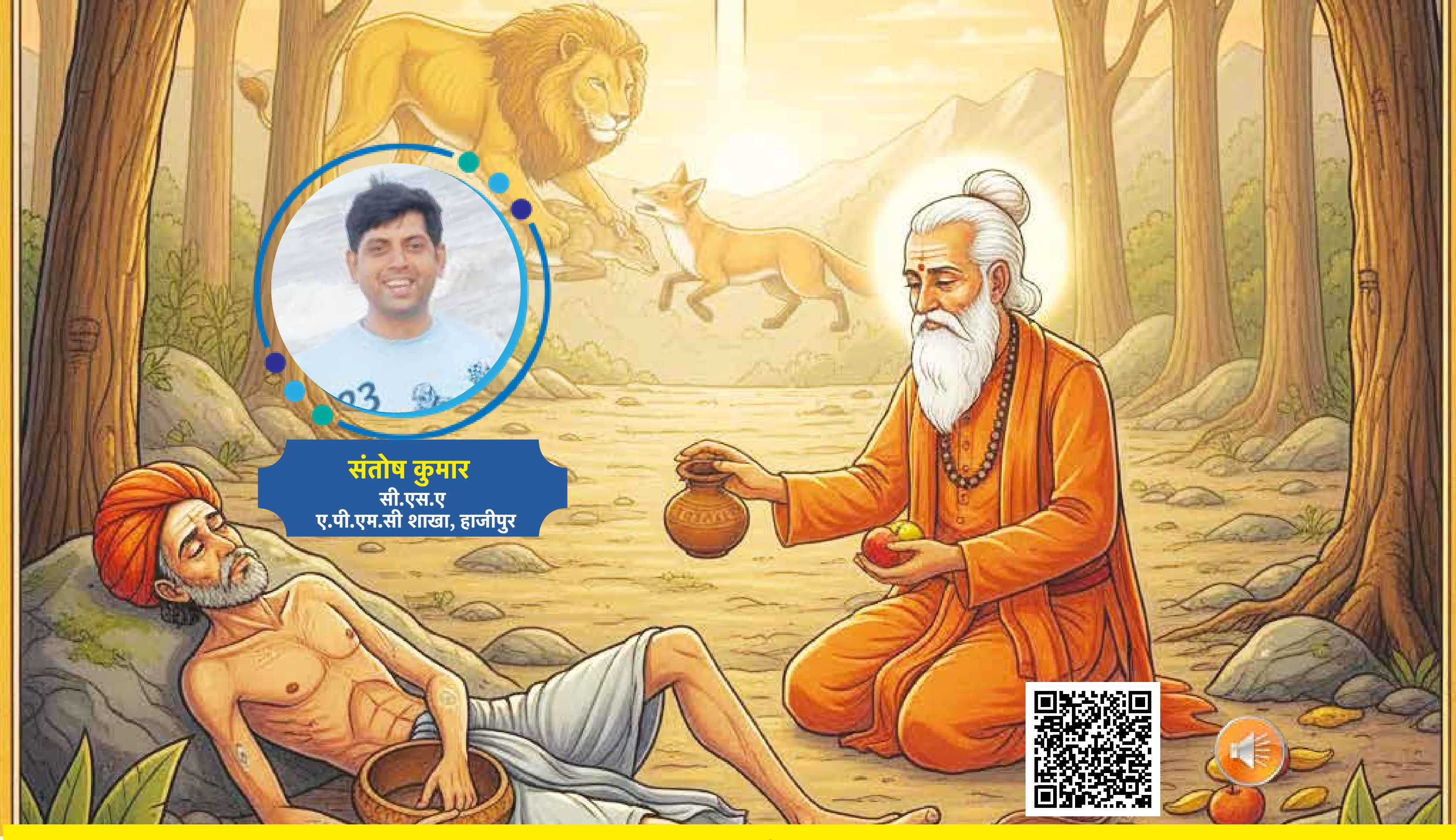

संतोष कुमार
सी.एस.ए
ए.पी.एम.सी शाखा, हाजीपुर

नासमझ इंसान

एक बार एक किसान जंगल में लकड़ी बीनने गया तो उसने एक अद्भुत बात देखी कि,

एक लोमड़ी के दो पैर नहीं थे, फिर भी वह खुशी खुशी घसीट कर चल रही थी।

यह कैसे ज़िंदा रहती है जबकि किसी शिकार को भी नहीं पकड़ सकती, किसान ने सोचा. तभी उसने देखा कि एक शेर अपने दांतो में एक शिकार दबाए उसी तरफ आ रहा है. सभी जानवर भागने लगे, वह किसान भी पेड़ पर चढ़ गया. उसने देखा कि शेर, उस लोमड़ी के पास आया. उसे खाने की जगह, प्यार से शिकार का थोड़ा हिस्सा डालकर चला गया।

दूसरे दिन भी उसने देखा कि शेर बड़े प्यार से लोमड़ी को खाना देकर चला गया. किसान ने इस अद्भुत लीला के लिए भगवान का मन में नमन किया। उसे अहसास हो गया कि भगवान जिसे पैदा करते है उसकी रोटी का भी इंतजाम कर देते हैं।

यह जानकर वह भी एक निर्जन स्थान चला गया और वहां पर चुपचाप बैठ कर भोजन का रास्ता देखता। कई दिन गुज़र गए, कोई नहीं आया। वह मरणासन्न होकर वापस लौटने लगा।

तभी उसे एक विद्वान महात्मा मिले। उन्होंने उसे भोजन पानी कराया, तो वह किसान उनके चरणों में गिरकर वह लोमड़ी की बात बताते हुए बोला, महाराज, भगवान ने उस अपंग लोमड़ी पर दया दिखाई पर मैं तो मरते मरते बचा; ऐसा क्यों हुआ कि भगवान् मुझ पर इतने निर्दयी हो गए ?

महात्मा उस किसान के सर पर हाथ फिराकर मुस्कुराकर बोले, तुम इतने नासमझ हो गए कि तुमने भगवान का इशारा भी नहीं समझा इसीलिए तुम्हें इस तरह की मुसीबत उठानी पड़ी। तुम ये क्यों नहीं समझे कि भगवान् तुम्हे उस शेर की तरह मदद करने वाला बनते देखना चाहते थे, निरीह लोमड़ी की तरह नहीं।

हमारे जीवन में भी ऐसा कई बार होता है कि हमें चीजें जिस तरह समझनी चाहिए उसके विपरीत समझ लेते हैं। ईश्वर ने हम सभी के अंदर कुछ न कुछ ऐसी शक्तियां दी हैं जो हमें महान बना सकती हैं,

चुनाव हमें करना है, हमें शेर बनना है या लोमड़ी..!

मुसाफिरों के तोहफे

जिंदगी में हालात के साथ,
खुद को बदलना है मगर,
बीते हुए लम्हों में साथ चले,
मुसाफिरों को याद करना पड़ता है हर पल।

खुदा की इस दुनीया में,
मुसाफिरों से मिले तोहफे,
थे अजीब बड़े,
कुछ का तोहफा था,
मोहब्बत भरा
कुछ से तो केवल
नफरत ही मिले।

कुछ ने तो तोहफे में,
केवल वादे दी अपनी-अपनी,
पर कुछ ने तो,
ताका भी न मुड़कर इधर,
अफसोस कि वो हमें याद रहे सदा,
इन तोहफों को मैंने
संभाल कर रखा
खुदा तेरी रहमत समझ कर।

भोर

यूँ स्वागत करें सुबह का,
निकलें बाहर, बत्तियां बुझा दें,
अपने कमरे का।
देखें पूरब की ओर,
महसूस करेंगें आती हुई भोर।
सुनें परिंदों की चहचाहट,

महसूस करेंगे, कैसे आती है सुबह
चुपचाप, बिना आहट।
मंद-मंद बहती हवा को,
महसूस करेंगें रोम - रोम
ऐसे आती है भोर।
सुबह - सुबह कोयल गाती हैं,

सुरज को जगाती है।
मैना, तोता, गौरैया भागते हैं,
अपनी मंजिल की ओर,
कहीं हो न जाये भोर।
तब देखेंगें पेड़ो के पीछे
तो पायेंगें

जागता हुआ, झांकता हुआ
लाल-लाल सूरज,
जो अपनी आभा से,
बना रहा आसमां को खूबसूरत,
उसकी लालीमा जो फैल रही चहुँओर,
ऐसे आती है भोर।

ऋषि राज
प्रबंधक (ए. बी. एम.)
बद्दोपुर शाखा

धीरज भारद्वाज
शाखा प्रबंधक
पकौली

एक शाखा प्रबंधक का रविवार

एक बैंकर का रविवार ऐसा होता है, जिसे देखकर सोमवार भी शर्म से सिर झुका ले और अगर कुंडली के सप्तम भाव में शनि होने के कारण आप शाखा प्रबंधक के पद को प्राप्त हो चुके है तब तो माशा अल्लाह आपका सन्डे तो चुनावी वादे की तरह विलुप्त हो जायेगा। परंपरा रही है कि सन्डे को अलार्म नहीं लगाया जाता और ऐसे में जब सुबह 7:30 पर आँख खुलती है, तो दिमाग सोचता है - "लेट हो गए !" फिर याद आता है कि आज तो बैंक बंद है। इस खुशी में दो सेकंड मुस्कान आती है और तीसरे सेकंड मोबाइल हाथ में होता है। व्हाट्सएप पर 76 नोटिफिकेशन - कुछ गुड मॉर्निंग, कुछ सुविचार और बाकी सब बैंकिंग में पीएचडी वालो का ज्ञान और भविष्य की चिंता। ऊपर से सन्डे को तो पूरे हफ्ते का बचा हुआ डेढ़ हजार अनरीड मेसेज भी तो देखना होता है। उठने में देरी तो होगी ही - वैसे भी माँ या पत्नी के चार ताने सुने बिना कौन बिस्तर छोड़ता है।

अब उठते तो इस अंदाज़ से है कि आज सारा दिन आराम करेंगे - पर बाथरूम जाने के बाद याद आता है कि कल दो अकाउंट गिर रहा है, नास्ता के बाद कस्टमर को कॉल लगा लूँगा। दाँत ब्रश करते समय दिमाग में कासा बढ़ाने की योजना चलती रहती है। नहा के बाद जब ईश्वर के ध्यान की बारी आती है तो शांत मन में उस कस्टमर का चेहरा याद आ जाता है जो कल बिना मतलब का चार बात सुना के गया। नाश्ता में पराठे का स्वाद एनपीए रिकवरी की क्षीण संभावनाओं से फीका पड़ जाता है, तभी एक ग्राहक का फोन: " सर, आज बैंक बंद है क्या ?" मैनेजर विनम्रता से रविवार का महत्व समझाते हैं, और मन ही मन सोचते हैं कि बैंक से ही देश की सारी समस्याओं का समाधान क्यों अपेक्षित है।

दोपहर में आराम करने का फैसला होता है, जिसका अर्थ है सोफे पर लेटकर टीवी देखना पर दिमाग में एग्रीकल्चर की निगेटिविटी की अलग ही फिल्म चल रही होती है। पोल्ट्री वाले लोन से कितना कवर होगा – इसी गणित में

उलझे रहते है, तबतक खाना आ जाता है। खाना स्वादिष्ट होता है, लेकिन हर निवाला इंस्पेक्शन रिप्लाई में हो रहे विलम्ब की चिंता के साथ निगला जाता है। थोड़ी देर की झपकी मुश्किल से आती है कि तभी कैशियर साहब का फोन: "सर, कल आ नहीं पाएंगे !" ले बेटा ! एक तो कल कैश नहीं है ऊपर से अब कैशियर भी गायब। कैश कहाँ से मंगवाए और लाने कौन जायेगा अब। ज़ेडओ फ़ोन करू क्या डेपुटेसन के लिए। छोड़ो - उल्टा सुनना ही पड़ेगा ! सुबह देखता हूँ कोई उपाय।

शाम को परिवार के साथ समय बिताने का प्रयास होता है। टहलने जाते हुए कदम गिनते हैं और साथ ही इस महीने खुले खातों की संख्या भी। बच्चे स्कूल की बातें करते हैं, लेकिन मैनेजर को हर शब्द में सीकेवाईसी और रिकेवाईसी ही सुनाई देता है। रास्ते में कुछ परिचित मिल गए – "हमारा एटीएम नहीं आया आज तक और दो हफ्ते से मेसेज भी नहीं आता " तो घर लौटते समय जेब में एक एटीएम का आवेदन, एक आधार की फोटोकॉपी और एक अनकहा दबाव होता है। रात में बच्चों से होमवर्क पूछते हैं, लेकिन खुद का होमवर्क अधूरा है - एसएमए का विजिट हो नहीं पा रहा, 10 एसएचजी का डीएएमसी बाकी है, प्रेमाईसेस का रेनोवेशन प्रपोजल अभी तक नहीं भेजे और आधा सीसी अकाउंट रिन्यूअल को ड्यू है। खैर ! कल बैंक जरा जल्दी जायेंगे इस सोच के साथ प्रबंधक खुद को सांत्वना देता है। सामने रखी चाय ठंडी हो जाती है, लेकिन विचार गर्म रहते हैं।

रात के खाने के बाद शाखा प्रबंधक मोबाइल साइलेंट पर डालते हैं, लेकिन मोबाइल साइलेंट पर होता है, दिमाग नहीं। सोते समय तय करते हैं - अगले रविवार पूरा आराम करेंगे। लेकिन अनुभव बताता है कि यह संकल्प भी उतना ही मजबूत होता है जितना बिना केवाईसी का खाता और बिना डॉक्यूमेंट का लोन।

सरकारी नौकरी

दीपक झा
मुख्य प्रबंधक
एक्जीबिशन रोड शाखा, पटना

हरिया सोया था, लेकिन नींद नहीं आ रही थी। भला नींद कैसे आये, मन में चिंता था, कैसे होगा, क्या करेंगे, स्नातक करते-करते,उम्र 21 साल हो गया था, बहुत तनावपूर्ण समय था। हरिया भाइयों में बड़ा था। इसीलिए 10+2 करने के बाद हीं घर से पैसे मांगने में भी शर्म लगता था। आखिर उसे छोड़कर 1 भाई और बहन था, उसके पढ़ाई-लिखाई में भी खर्च था। पिताजी को पेंशन में मात्र 5000 रुपये मिलते थे। किसी तरह गुजर-बसर करता था। हरिया के मन में आगे पढ़ाई करने का इच्छा भी था लेकिन कभी कभी मन करता कि जैसे गाँव के सभी लोग बाहर कमाने चले गये, मैं भी चला जाता हूँ। अपने अंतर्द्वंद्व से जूझता हरिया किसी तरह स्नातक तो पास कर लिया, लेकिन आगे कोई करियर का उम्मीद नहीं दिख रहा था। कभी-कभी सोचता की काश पिताजी के पास पैसे होते तो कोई पेशेवर कोर्स कर लेता, लेकिन वो भी नहीं सम्भव था। फ़िरभी उसने हिम्मत न हारा,सरकारी नौकरियों की तैयारी शुरू की। माँ कहती कि बेटा सरकारी नौकरी मिलना भगवान से कम नहीं है। बहुत तपस्या करना पड़ता, बहुत मेहनत, त्याग और लगन चाहिए। हरिया ने ठान तो लिया लेकिन आर्थिक स्थिति जर्जर थी, पैसे कहाँ से आयेगा। फिर उसने विद्यालय में पढ़ाना शुरू कर दिया, ताकि कुछ पैसे मिल जाये, जिससे फॉर्म भर कर एग्ज़ाम दे सके। अब विद्यालय ज्वाइन करने के बाद समय हीं नहीं मिलता था, पढ़ाई करने का, परिणामस्वरूप परीक्षा भी देता था तो प्रारंभिक परीक्षा में भी फेल कर जाता था। कोई एक लक्ष्य नहीं था, लगभग सभी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेता था, ताकि कहीं सफलता मिले। कहते हैं न कि समय और भाग्य से पहले कुछ न मिलता। हरिया का बुरा दौर चल रहा था, विद्यालय में पढ़ाता था तो 2500 रुपये मासिक मिलता था, जिससे पेट भरना मुश्किल था। कभी-कभी पिताजी भी कहते कि बेटा क्या करेगा, उम्र बढ़ती जा रही, मां भी हँस कर कहती, बेटा कब तक इसी तरह नाश्ता बनाती रहूँगी। पता नहीं कब सूर्योदय होगा। हरिया बेचारा क्या करता, सदैव अपने अंतर्द्वंद्व से जूझ रहा था। बिहार जैसे राज्यों में एक मध्यमवर्गीय बच्चे का जीवन बेहद कष्टप्रद रहता, क्यूँकि न कोई बड़ी कम्पनियाँ होती। विद्यार्थियों के पास दो ऑप्शन होते, अगर आर्थिक स्थिति ठीक तो कोई पेशेवर कोर्स, अगर ठीक नहीं तो फिर सरकारी नौकरी! अब उसने मन हीं मन प्रण किया कि अब और ज्यादा लग्न से तैयारी करेंगे। आखिर विद्यालय के सहकर्मी भी कहते थे कि आपका उम्र कम है,इसमें करियर नहीं है,

तैयारी करें, अभी बैंक भी वेकैंसी दे रही है। उसने हिम्मत कर विद्यालय छोड़ दिया लेकिन 3 घण्टे होम ट्यूशन पढ़ाता रहा, ताकि पॉकेट खर्च मिल जाय। फिर वो तैयारी तो शुरू कर दिया, लेकिन उसे समुचित वातावरण नहीं मिल पा रहा था, जिससे सफलता नहीं मिल रहा थी। अब कहीं जाना भी नहीं चाहता था क्यूँकि लोग असफलता पर ढाढ़स बढ़ाने के बज़ाय और अंदर से तोड़ देते। पिछली ही साल छठ पूजा में गाँव गया था, पड़ोसी क्या अपनी चाची भी ताना मार रही थी। चुपचाप अपमान का घूँट पी कर रह गया। वापस अपने घर लौट आया। तभी रेलवे सुरक्षा बल की नौकरी निकली थी, पूरा शहर उसका तैयारी करने जुट गया था फिर हरिया कहाँ पीछा रहता, झुंड में शामिल हो गया, 7दिन अभ्यास हीं किया था कि अचानक एक परिचित मिल गये, उसे देख अचंभित स्वर में कहा, यार तुम क्या....तुम क्या इसमें लगे हो, तुम्हारी अंगेजी ठीक है, बैंक की करो....रमेश कोचिंग सेंटर में सब लोग ग्रुप स्टडी करते, वहीं जाव...हरिया को सुन कर उम्मीद का किरण जागा।अगले ही दिन से वहाँ जाने लगा, अभ्यास करने लगा, लेकिन इतना आसान कहाँ?? 40सीट रहते,40000 आवेदन करते, फ़िरभी उम्मीद न छोड़ा..! उसने तैयारी शुरू कर दी, सीखने के लिये सभी वरिष्ठ लोगों से मिलना शुरू कर दिया। भाड़े पर पत्रिका भी लेना शुरू कर दिया,जो सस्ती मिलती थी, दैनिक खरीद दाम के मात्र 10% लगते थे, ताकि पूर्ववत परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र मिल जाते थे, जिसे जिरोक्स कर वापस दे देता था। पहला परीक्षा SBI PO का दिया था, कुछ समझ नहीं आया,कैसे समय बीत गया, 2 प्रश्न में उलझ कर 30मिनट बीत गये,परिणामस्वरूप पास तो छोड़िये 50% सवाल भी हल न कर पाया। निराश था खुद से, सोचता था, अगर यही हाल रहा,कुछ नहीं होगा, लगता था मां ठीक कहती थी, पीसा जी के पास जाओ, जॉब पर कहीं रखवा देंगें। चला भी गया पंजाब, लेकिन मन नहीं लगा, फिर वापस आ गया, फिर लग गया तैयारी करने, इस बार दुगुने जोश की तरह जैसे घायल शेर शिकार पर आक्रमण करता है। अब घड़ी के साथ अभ्यास शुरू कर दिया,पूरा दिन में 4-5 सेट बनाने लगा, शुरुआत क्लर्क से किया, फिर PO!स्पीड भी बढ़ गया....पहले जहाँ 2 घण्टे में 200 सवाल नहीं बन पाता था, वो अब 1 घण्टे 15मिनट में बन जाता था। अब हरिया को लगने लगा कि तैयारी सही दिशा में हो रही। पहला बार मध्य बिहार ग्रामीण बैंक क्लर्क का परिणाम निकला, उसमें उसे 172 आया फिर भी सामान्य कैटेगरी के कारण 1अंक से चूक गया। हरिया के आँसू आ गये।

हरिया उदास तो था, लेकिन खुशी के आँसू निकल रहे थे,एक उम्मीद जाग गया था। फिर उसने सोचा अब और तैयारी करेंगे, यही सोचकर पंजाब नेशनल बैंक में क्लर्क का भर्ती निकला था, उसने फॉर्म नहीं भरा लेकिन उसी में एक साथी को हो गया। कहते हैं न कि गम तब ज्यादा होता, जब आप फेल हों और साथी पास हो! सारा रात्रि सो नहीं पाया,पछतावा से की फॉर्म क्यूँ नहीं भरा, फिर कहते हैं न कि धीरे धीरे वक्त हर गम पर मरहम लगा देती है। हरिया ने उसे भुला कर फिर आगे कोई भी बैंक का फॉर्म भरना नहीं छोड़ा। ये भी सही है कि किसी भी मैदान में एक छक्के लगाने की देरी होती, फिर अंबार लग जाता। हरिया अंतिम रूप से आईबीपीएस के माध्यम से बैंक में पीओ के पद पर चुना गया, उसकी बहन अस्पताल में एडमिट थी, रात के 8 बजे परिणाम निकला, परिणाम के साथ हीं हरिया खुशी से झूम उठा, उसने माताजी को फ़ोन किया, उनके आँखों मे खुशी के आँसू थे, फिर उसके बाद बाँकी 10 जगहों पर भी हरिया पास कर गया। जो कल तक ताना दे रहे थे, आज उनके मुख से मधुर स्वर सुन गजब अनुभूति मिल रहा था।

हम सबके प्रिय:हमारे अटल जी

नींद की आगोश में,
फिर सुनहरे ख़्वाब में।

मिलना हो मुमकिन सही,
फिर वही अंदाज में।

मौत तो बहाना है,
मुझे फिर से आना है।

फिर वही अंदाज में,
मुझे गले लग जाना है।

जा रहा हूँ वक्त से मैं,
तिरंगे में लिपट के मैं।

कुछ ख़्वाब ऐसा बुन के मैं,
देखा जो बचपन में मैं।

कुछ ख़्वाब तुम को दे मैं,
वतन हवाले कर के मैं।

जा रहा हूँ वक्त से मैं,
तिरंगे में लिपट के मैं।

नींद की आगोश में,
फिर सुनहरे ख़्वाब में।

मिलना हो मुमकिन सही,
फिर वही अंदाज में।

श्रीमती शिखा
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

ग्राहक शिकायत और बैंक

ग्राहक सेवा है हमारा केंद्र, त्वरित कार्यनिष्पादन करें हम
उनके चेहरे पर रहे मुस्कान, यही ध्येय है सदैव हमारा।
विश्वास की ये गाथा, हम सब मिलकर गाएँ,
बैंक और ग्राहक, बंधन सदा निभाएँ।
काउंटर पर स्वागत, मोबाइल सेवा साथ,
नयी तकनीक संग चलकर, बढ़ते हर दिन अपने उत्पादों के साथ।
विनम्रता है भाषा हमारी, अपनापन है ताल,
हर समस्या का हल देना, यही है सेवा का कमाल।
ग्राहक सेवा, दिल से हमारा प्रण,
सुरक्षा-सुविधा, रहे सदा संग-संग।
विश्वास की ये गाथा, हम सब मिलकर गाएँ,
बैंक और ग्राहक, बंधन सदा निभाएँ।
मदद, सहयोग, सम्मान, हमारी संस्कृति का स्वर,
ग्राहक के संग बढ़ता जाए, ये रिश्तों की डगर।
ग्राहक शक्ति, ग्राहक प्रेरणा, उनसे ही पहचान,
उनकी खुशियों में बसता है, बैंक का सच्चा मान।

रवि प्रकाश
प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और बैंकिंग

मनोज कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
एफजीएमओ पटना

आधुनिक युग को डिजिटल क्रांति का युग कहा जाता है जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) ने प्रत्येक क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किया है। बैंकिंग क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने बैंकिंग प्रणाली को अधिक तेज, सुरक्षित और ग्राहक –केंद्रित बना दिया है। हालांकि, इसके साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ और जोखिम भी जुड़े हुए हैं।

बैंकिंग परिप्रेक्ष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग को विभिन्न बिंदुओं के अंतर्गत रेखांकित किया जा सकता है:-

1. **कार्यकुशलता और गति में अभूतपूर्व वृद्धि**

   एआई आधारित सिस्टम बड़े व्यापक पैमाने पर डेटा को कुछ ही सेकेंड में प्रोसेस कर सकते हैं। पहले ऋण स्वीकृति, केवाईसी सत्यापन और रिपोर्टिंग में कई दिन या सप्ताह लगते थे, जबकि अब ये प्रक्रियाएँ मिनटों में पूरी हो जाती हैं । इससे बैंकिंग प्रणाली अधिक तेज, कुशल और विश्वसनीय बनी है।

2. **ग्राहक सेवा का आधुनिकीकरण**

   एआई आधारित चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट ग्राहकों को 24x7 सेवाएं प्रदान करते हैं। बैलेंस पूछताछ, शिकायत पंजीकरण और सामान्य प्रश्नों का समाधान तुरंत हो जाता है। इससे शाखाओं में भीड़ कम हुई है और कर्मचारियों को जटिल मामलों पर ध्यान देने का अवसर मिला है ।

3. **धोखाधड़ी और जोखिम प्रबंधन में मजबूती**

   एआई लेनदेन के पैटर्न का विश्लेषण कर संदिग्ध गतिविधियों की तुरंत पहचान करता है। क्रेडिट कार्ड फ्रॉड, फर्जी ट्रांजैक्शन और मनी लॉन्ड्रिंग जैसे अपराधों को रोकने में एआई अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ है, जिससे बैंकिंग सुरक्षा में भारी सुधार हुआ है।

4. **डेटा आधारित निर्णय प्रणाली**

   एआई ने निर्णय लेने की प्रक्रिया को व्यक्तिपरक से वस्तुनिष्ठ बना दिया है। ऋण स्वीकृति, क्रेडिट स्कोरिंग और जोखिम मूल्यांकन वास्तविक डेटा और व्यवहारिक विश्लेषण पर आधारित हैं, जिससे पक्षपात और त्रुटियों की संभावना कम हुई है।

5. **परिचालन लागत में कमी**

   बैंक के कार्यों में ऑटोमेशन से मैनुअल स्टाफ पर निर्भरता कम हुई है। इससे बैंक की परिचालन लागत घटती है और संसाधनों का कुशल उपयोग संभव होता है।

इसके साथ ही कृत्रिम बुद्धिमता का बैंकिंग परिदृश्य में प्रतिकूल असर भी पड़ता है। इसे भी हम निम्न बिंदुओं के अंतर्गत विवेचना कर सकते है:-

1. **रोजगार पर प्रतिकूल प्रभाव**

   एआई और ऑटोमेशन के कारण क्लेरिकल और नियमित कार्यों की आवश्यकता कम होती जा रही है। इससे पारंपरिक बैंकिंग नौकरियों पर प्रभाव पड़ा है और कर्मचारियों के पुनः प्रशिक्षण की आवश्यकता बढ़ी है।

2. **डेटा गोपनीयता और नैतिक चुनौतियाँ**

   एआई पूरी तरह डेटा पर निर्भर है। यदि ग्राहक की व्यक्तिगत और वित्तीय जानकारी का उचित नियंत्रण न हो, तो डेटा दुरुपयोग और गोपनीयता हनन का खतरा उत्पन्न हो सकता है।

3. **साइबर सुरक्षा का बढ़ता खतरा**

   डिजिटल और एआई आधारित बैंकिंग के विस्तार के साथ साइबर अपराधियों के अवसर भी बढ़े हैं। हैकिंग, डेटा चोरी और रैनसमवेयर जैसे खतरे बैंकों के लिए गंभीर चुनौती बन चुके हैं ।

4. **मानवीय संवेदनशीलता की कमी**

   एआई तर्क और डेटा पर आधारित निर्णय करता है लेकिन वह मानवीय भावनाओं और सामाजिक परिस्थितियों को पूरी तरह नहीं समझ सकता । कुछ मामलों में मानव निर्णय अधिक उपयुक्त और संवेदनशील हो सकता है।

5. **उच्च प्रारंभिक निवेश**

   एआई सिस्टम के विकास और क्रियान्वयन में भारी पूंजी, कुशल मानव संसाधन और निरंतर तकनीक अपग्रेड की आवश्यकता होती है, जो सभी बैंकों के लिए संभव नहीं है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानव बुद्धिमता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का संतुलित समन्वय किया जाए। उचित नियामक ढाँचे, साइबर सुरक्षा उपायों और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से एआई आधारित बैंकिंग को सुरक्षित, समावेशी और समयानुरूप बनाया जा सकता है।

अमन कुमार
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

बैंकिंग व्यवस्था में ऋण निगरानी का महत्व

आधुनिक वित्तीय व्यवस्था की स्थिरता और विश्वसनीयता का आधार सुदृढ़ ऋण प्रणाली है। बैंकों और वित्तीय संस्थानों द्वारा दिया गया ऋण न केवल आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान करता है, बल्कि उद्योग, कृषि, व्यापार एवं सेवा क्षेत्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किंतु ऋण का प्रभावी उपयोग और उसकी समयबद्ध वसूली तभी संभव है जब ऋण निगरानी की प्रक्रिया सशक्त और निरंतर हो। ऋण निगरानी वित्तीय अनुशासन, जोखिम प्रबंधन और संस्थागत स्थायित्व का एक अनिवार्य घटक है।

ऋण निगरानी का आशय

ऋण निगरानी से तात्पर्य ऋण स्वीकृति के पश्चात् ऋण खाते की नियमित समीक्षा, उपयोग की जांच, पुनर्भुगतान की स्थिति पर सतत नजर तथा संभावित जोखिमों की समय रहते पहचान से है। यह प्रक्रिया ऋण संवितरण तक सीमित न होकर उसके पूर्ण निपटान तक चलती रहती है।

वित्तीय स्थिरता में भूमिका

ऋण निगरानी वित्तीय व्यवस्था को गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (NPA) से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समय पर निगरानी से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि ऋण का उपयोग निर्धारित उद्देश्य के लिए हो रहा है तथा उधारकर्ता की पुनर्भुगतान क्षमता बनी हुई है। इससे बैंकों की परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार होता है और पूंजी पर दबाव कम रहता है।

जोखिम प्रबंधन का प्रभावी साधन

प्रभावी ऋण निगरानी संभावित चूक (डिफॉल्ट) के संकेतों को प्रारंभिक अवस्था में ही उजागर कर देती है। जैसे-किस्तों(ईएमआई) में विलंब, खाते में अनियमित लेन-देन, व्यवसायिक गतिविधियों में गिरावट आदि। इन संकेतों के आधार पर बैंक समय रहते सुधारात्मक कदम उठा सकते हैं, जैसे पुनर्संरचना, परामर्श या अतिरिक्त निगरानी।

नियामकीय अनुपालन एवं पारदर्शिता

भारतीय रिज़र्व बैंक तथा अन्य नियामक संस्थाएं बैंकों को सुदृढ़ ऋण निगरानी प्रणाली अपनाने के लिए दिशा-निर्देश जारी करती हैं। इनका पालन न केवल नियामकीय अनुपालन सुनिश्चित करता है, बल्कि संस्थागत पारदर्शिता और जवाबदेही को भी सुदृढ़ करता है। इससे जमाकर्ताओं और निवेशकों का विश्वास बना रहता है।

वास्तव में, ऋण निगरानी बैंकिंग प्रणाली का बेहद महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका उद्देश्य बैंक द्वारा दिए गए ऋण की सुरक्षा, समय पर वसूली और संभावित जोखिमों को कम करना होता है। सही निगरानी से बैंक अपने एनपीए (गैर निष्पादित आस्ति) को नियंत्रित कर सकता है और वित्तीय स्थिरता बनाए रखता है। ऋण निगरानी का महत्व वित्तीय संस्थानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह जोखिमों को कम करने, धोखाधड़ी रोकने, बेहतर ऋण प्रबंधन और सूचित

निर्णय लेने में मदद करती है, जिससे वित्तीय स्थिरता बढ़ती है और ग्राहकों का विश्वास भी बनता है। यह सुनिश्चित करती है कि ऋणों का समय पर भुगतान हो और समय से पहले समस्याओं का पता लगाकर समाधान किया जा सके।

ऋण निगरानी के महत्त्व को विभिन्न बिन्दुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है -

1. **ऋण की गुणवत्ता सुनिश्चित करना**

   निगरानी से ग्राहक की वित्तीय स्थिति और व्यवसाय की प्रगति पर लगातार नजर रहती है। इससे बैंक यह तय कर पाता है कि ऋण जोखिममुक्त है या नहीं। हम सभी अवगत है कि केवल मानक आस्तियाँ ही बैंक के लिए आय उपार्जित करती है और इसी आय के परिणामस्वरूप हानिगत आस्तियों हेतु प्रावधान को कम किया जा सकता है।

2. **एनपीए (गैर निष्पादित आस्ति) बनने की संभावना कम**

   यदि समय रहते ग्राहक की रिपेमेंट क्षमता कमजोर दिखती है, तो बैंक तुरंत कदम उठा सकता है-जैसे पुनर्संरचना (restructuring), अतिरिक्त निगरानी या वसूली योजना (additional collateral, या recovery plan)। इससे एनपीए बनने की स्थिति को रोका जा सकता है।

3. **प्रतिभूति (Security) का संरक्षण**

   बैंक समय-समय पर स्टॉक स्टेटमेंट, बीमा, मशीनरी/संपत्ति की स्थिति, ड्रॉइंग पावर आदि की जांच करता है, जिससे उसकी सुरक्षा सुरक्षित रहती है।

4. **धोखाधड़ी रोकने में मदद**

   नियमित निगरानी से गलत स्टेटमेंट, फर्जी बिल, निधि का दूरूपयोग जैसी गतिविधियाँ तुरंत पकड़ में आ जाती हैं, जिससे धोखाधड़ी का खतरा कम होता है।

5. **नियामकीय अनुपालन (Compliance)**

   भारतीय रिज़र्व बैंक और बैंक की आंतरिक नीतियाँ समय-समय पर विभिन्न रिपोर्ट और निरीक्षण की मांग करती हैं। निगरानी सुनिश्चित करती है कि बैंक नियमन का पालन कर रहा है।

6. **ग्राहक के व्यवसाय के स्थिति का आकलन**

   आंतरिक निगरानी कार्रवाई से बैंक यह तय करता है कि:

- ग्राहक के व्यवसाय में वृद्धि हो रही है या गिरावट
- नगदी प्रवाह (Cash flow) कैसा है
- कार्यशील पूंजी (Working capital) का उपयोग सही तरह से हो रहा है या नहीं।

7. **समय पर निर्णय लेने में सहायता**

   यदि कोई खाते में early warning signals दिखें- जैसे अनियमितता (irregularity), खाते में बार-बार drawing power, बकाया राशि से कम हो जाना (frequently DP shortfall), चेक की वापसी (cheque return) , तो बैंक समय रहते सुधारात्मक कार्रवाई (corrective action) ले सकता है।

8. **बैंक की लाभप्रदता (Profitability) में वृद्धि**

   ऋण निगरानी में गुणवत्ता (Good loan monitoring) = बेहतर वसूली (better recovery) = एनपीए कम = अधिक लाभ।

डिजिटल बैंकिंग, डेटा एनालिटिक्स और एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) के प्रयोग से ऋण निगरानी अधिक प्रभावी और त्वरित हो गई है। रियल-टाइम डेटा, अर्ली वार्निंग सिस्टम और क्रेडिट स्कोरिंग मॉडल बैंकों को जोखिम का पूर्वानुमान लगाने में सक्षम बना रहे हैं। इससे निर्णय प्रक्रिया अधिक वैज्ञानिक और निष्पक्ष होती जा रही है।

वास्तव में ऋण निगरानी बैंक के लिए सुरक्षा कवच की तरह है। यह ऋण को सुरक्षित, ऋणग्राही को जिम्मेदार और बैंक को वित्तीय मजबूत बनाती है। ऋण निगरानी केवल एक प्रक्रियात्मक औपचारिकता नहीं, बल्कि वित्तीय व्यवस्था की रीढ़ है। यह बैंकों को जोखिम से बचाने, परिसंपत्ति गुणवत्ता बनाए रखने तथा अर्थव्यवस्था को स्थिर और सुदृढ़ बनाए रखने में सहायक है। बदलते आर्थिक परिदृश्य में प्रभावी ऋण निगरानी तंत्र को और अधिक सशक्त बनाना समय की आवश्यकता है, ताकि वित्तीय विकास सतत, संतुलित और भरोसेमंद बना रहे।

श्री नवनीत
सहायक महाप्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

बैंक की वसूली में लोक अदालत की भूमिका

"जनता की अदालत", एक ऐसा मंच जहाँ न्यायालयों में या मुकदमे-पूर्व (pre-litigation) स्तर पर लंबित मामलों का सौहार्दपूर्ण ढंग से समझौता किया जाता है। त्वरित, सस्ता, और सुलभ न्याय प्रदान करना, जिससे अदालतों पर बोझ कम हो और जनता को न्याय प्रणाली से जोड़ा जा सके। विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 (Legal Services Authorities Act, 1987) के तहत इसे वैधानिक दर्जा प्राप्त है, और इसका निर्णय सिविल कोर्ट के आदेश के समान होता है और अंतिम होता है।

बैंक और लोक अदालत

महत्व: बैंकों के लिए यह एक महत्वपूर्ण मंच है, खासकर बढ़ते NPA (Non-Performing Assets) और धीमी वसूली प्रक्रिया के कारण।

कार्यप्रणाली:

बैंक अपने फंसे हुए (NPA) खातों, जैसे व्यक्तिगत ऋण, क्रेडिट कार्ड ऋण, या आवास ऋण (आमतौर पर 20 लाख रुपये तक) के मामलों को लोक अदालत में भेजते हैं।

बैंक और कर्जदार दोनों को बुलाया जाता है और एक न्यायाधीश या पैनल की अध्यक्षता में समझौता कराया जाता है।

यह एक अनौपचारिक और मैत्रीपूर्ण प्रक्रिया है जहाँ दोनों पक्ष अपनी बात रख सकते हैं।

लोक अदालत का महत्वपूर्ण योगदान

त्वरित समाधान: महीनों या सालों की कानूनी लड़ाई के बजाय, मामले जल्दी निपटाए जाते हैं।

लागत प्रभावी: कोर्ट फीस कम या शून्य होती है, जिससे दोनों पक्षों का पैसा बचता है।

बाध्यकारी निर्णय: लोक अदालत का फैसला अंतिम और सभी पक्षों पर बाध्यकारी होता है और इसके खिलाफ अपील नहीं की जा सकती।

लोक अदालत एक समझौता मंच है, जबकि सामान्य वसूली कानूनी नोटिस और मुकदमेबाजी के माध्यम से होती है। लोक अदालत में पक्षकारों की आपसी सहमति (mutual consent) महत्वपूर्ण है, जबकि मुकदमेबाजी में अदालत का निर्णय अंतिम होता है। लोक अदालत के फैसले के खिलाफ अपील नहीं होती, जबकि मुकदमेबाजी में अपील का प्रावधान होता है। वास्तव में, लोक अदालत बैंकों और कर्जदारों के बीच विवादों को निपटाने का एक शक्तिशाली, कुशल और किफायती तरीका है, जो न्याय प्रणाली में विश्वास बढ़ाता है.

लोक अदालत संस्थाएं बैंकों को संदिग्ध और घाटे की श्रेणी में आने वाले खातों से जुड़े विवादों को निपटाने में मदद करती हैं , जिनमें 5 लाख रुपये तक की बकाया राशि वाले खातों का लोक अदालत के तहत समझौता किया जाता है। ऋण वसूली न्यायाधिकरणों को 10 लाख रुपये और उससे अधिक के गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (एनपीए) के मामलों पर निर्णय लेने के लिए लोक अदालत आयोजित करने का अधिकार दिया गया है।

व्यवहारिक पक्ष के प्रमुख पहलू

1. त्वरित समाधान का लाभ

- लोक अदालत में मामलों का निपटारा एक ही दिन में हो सकता है, जिससे बैंक को लंबी अदालती प्रक्रिया से राहत मिलती है।
- यह विशेष रूप से छोटे ऋण मामलों में प्रभावी है।

2. आपसी सहमति पर आधारित प्रक्रिया

- निर्णय समझौते से होता है, इसलिए दोनों पक्षों को संतुष्टि मिलती है।
- बैंक को वसूली का अवसर मिलता है और ग्राहक को राहत (जैसे ब्याज में छूट, किस्तों में भुगतान)।

3. लागत में कमी

- कोई कोर्ट फीस नहीं, वकीलों की फीस भी न्यूनतम।
- बैंक के लिए NPA कम करने का व्यावहारिक तरीका।

4. चुनौतियाँ

- ग्राहक की अनुपस्थिति: कई बार उधारकर्ता लोक अदालत में उपस्थित नहीं होते।
- सीमित अधिकार: लोक अदालत केवल समझौता कर सकती है, जबरन वसूली नहीं कर सकती।
- जागरूकता की कमी: ग्रामीण क्षेत्रों में लोग लोक अदालत की प्रक्रिया से अनजान रहते हैं।
- बैंक प्रतिनिधियों की तैयारी: कई बार अधिकारी को समझौते की शक्ति नहीं दी जाती, जिससे प्रक्रिया बाधित होती है।

5. सफलता के कारक

- बैंक की सक्रिय भागीदारी और पूर्व तैयारी।
- उधारकर्ताओं को समय पर नोटिस और समझौते के विकल्पों की जानकारी।
- स्थानीय विधिक सेवा प्राधिकरण के साथ समन्वय।

6. परिणाम

- व्यवहारिक रूप से, लोक अदालत ने छोटे ऋण विवादों के निपटारे में उल्लेखनीय सफलता पाई है।
- यह बैंकिंग प्रणाली में विवाद समाधान का एक भरोसेमंद और व्यावहारिक मंच बन गया है।

भारतीय ग्रामीण बैंकिंग

जहां, पासबुक पॉलिथीन में रहती है
लाइन में खड़े लोग रिश्तेदार लगते हैं
"नेटवर्क नहीं है" एक स्थायी सूचना है।
वही हैं भारतीय ग्रामीण बैंकिंग
यहाँ बैंक सिर्फ बैंक नहीं।
गाँव की संसद
खबरों का अड्डा
और भरोसे का केंद्र होता है
अंगूठा लगाओ,
मशीन बोले - Try again
ग्राहक बोले - अब नया अंगूठा कहाँ से लाएँ
थोड़ा इंतजार है, थोड़ी चाय है
लेकिन भरोसा पूरा है।

ग्रामीण बैंक = देसी सिस्टम + सच्चा विश्वास

अमित कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (क्रेडिट)
अंचल कार्यालय पटना

हम बच्चें क्या है!

माँ बाप की बगिया के
फूल हम बच्चें हैं।
उनके सपनों के आकाश के,
तारे हम बच्चें हैं।
उनके अनकहे शब्दों के,
आवाज़ हम बच्चें हैं।
गमों के साये में,
उनके चेहरे की मुस्कान हम बच्चें हैं।
माँ बाप की बगिया के,
फूल हम बच्चें हैं।
उनके अधूरे सपनों को पूरा करने के
ख्वाब हम बच्चें हैं।
उनकी उम्मीदों का संसार, हम बच्चें हैं।
उनकी आशा और विश्वास, हम बच्चें हैं।
माँ, बाप की छोटी सी बगिया में,
खिले हुए फूल हम बच्चें हैं।
उनके आँसू के पीछे छुपी दु:ख का कारण,
तो कहीं उनकी खुशी का कारण, हम बच्चें हैं।
उनकी सहनशक्ति और बर्दाश्त का कारण हम बच्चें हैं।
उनके जीने की उम्मीद हम बच्चें हैं।
उनके बुढ़ापे का सहारा हम बच्चे हैं।
माँ, बाप की छोटी बगिया में, खिले हुए फूल हम बच्चें हैं।

रमेश कुमार झा
सीएसए, मगध महिला कॉलेज शाखा
पटना

हमारा समय

यह समय बहुत तेज़ है,
पर ठहराव की कमी से थका हुआ,
हाथों में तकनीक की चमक है
और आँखों में सवालों का धुआँ भरा हुआ।
सूचनाओं की बाढ़ में,
सत्य कहीं किनारे खड़ा है।
शब्द बहुत हैं, संवाद कम-
हर चेहरा जैसे मौन से जूझ रहा है।
विकास की ऊँची इमारतों में
नींव का हिसाब कौन रखे?
अंक बढ़े हैं सूचकांकों में,
पर मनुष्य का मूल्य कौन आँके?
संविधान की पंक्तियाँ दीवारों पर हैं,
आचरण में उनका अंश कम दिखता है,
अधिकारों की बातें सब करते हैं,
कर्तव्यों का स्वर धीमा पड़ जाता है।
फिर भी यह समय निराश नहीं-
क्योंकि उम्मीद अब भी साथ है,
हर प्रश्न के भीतर एक उत्तर है,
हर रात के बाद सुबह है।
कलम अभी मौन नहीं हुई,
सच अभी पूरी तरह हारा नहीं,
जब तक एक भी मन जाग्रत है,
यह वर्तमान भविष्य से हारा नहीं।

विकास कुमार सिन्हा
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय पटना

हिंदी पखवाड़ा – 2025 (एक रिपोर्ट)

इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा हिंदी पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 14 सितम्बर से 29 सितम्बर, 2025 तक किया गया। हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ के अवसर पर अंचल प्रबंधक एवं उप अंचल प्रबंधक महोदय की गरिमामयी उपस्थिति में अन्य समस्त कार्यपालकगण एवं अधिकारीगण द्वारा राजभाषा प्रतिज्ञा एवं माननीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के संदेश का पाठ किया गया। उक्त अवसर पर बैंक कार्मिकों के बीच हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं राजभाषा हिंदी में कामकाज के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं व गतिविधियों का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान आदरणीय अंचल प्रबंधक महोदय की अध्यक्षता में "बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता", "हर चित्र कुछ कहता है", "मूक पहेली", "कविता पाठ" एवं "वाद-विवाद प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया।

दिनांक 3 अक्टूबर, 2025 को हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ। उक्त अवसर पर आदरणीय अंचल प्रबंधक महोदय श्री अमन कुमार झा ने कहा कि जो भाषा तकनीक के साथ जुड़कर रहेगी वही भाषा भविष्य में सुरक्षित रहेगी। आज हिंदी में काम करने के लिए अनेक तकनीक सुविधाएं उपलब्ध है। इनका प्रयोग करके कार्यालयों में आसानी से हिंदी का प्रयोग किया जा सकता है। हिंदी में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। हमें गर्व के साथ राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। आदरणीय उप अंचल प्रबंधक महोदय श्री शैलेश कुमार ने कहा कि इंडियन बैंक सदैव हिंदी राजभाषा कार्यान्वयन व प्रचार-प्रसार हेतु तत्पर एवं प्रतिबद्ध है। हिंदी व्यवसाय की भाषा बन चुकी है। निश्चित रूप से इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन से उत्साह का वातावरण बनता है और स्टाफ सदस्यगण कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रोत्साहित होते हैं। उक्त समस्त कार्यक्रमों एवं गतिविधियों में अंचल कार्यालय, क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय एवं स्थानीय शाखाओं में कार्यरत स्टाफ सदस्यगण ने सक्रिय रूप से सहभागिता की।

राजभाषा प्रतिज्ञा एवं माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के संदेश का पाठ करते हुए अंचल प्रबंधक, उप अंचल प्रबंधक, मुख्य प्रबंधकगण व अन्य अधिकारीगण व कर्मचारीगण।

अंचल प्रबंधक महोदय की अध्यक्षता में "बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता", "हर चित्र कुछ कहता है", "मूक पहेली" "कविता पाठ", "वाद-विवाद प्रतियोगिता" का आयोजन

हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन

इंडियन बैंक अंचल कार्यालय, पटना द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के तत्वावधान में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार, स्टाफ सदस्यों की भाषायी दक्षता को प्रोत्साहित करने एवं कार्यालय में राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु आशु भाषण प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री बीरेंद्र कुमार यादव, माननीय सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, भारत सरकार ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी प्रशासनिक कार्यों को सरल, प्रभावी एवं जन-सुलभ बनाती है। उन्होंने बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी के व्यवहारिक एवं सृजनात्मक प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता इंडियन बैंक अंचल कार्यालय, पटना के अंचल प्रबंधक श्री अमन कुमार झा द्वारा की गई। उन्होंने नराकास के विभिन्न सदस्य कार्यालयों से पधारें अधिकारीगण का गर्मजोशी के साथ स्वागत करते हुए कहा कि आशु भाषण प्रतियोगिता केवल एक प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि यह विचारों की त्वरित अभिव्यक्ति, भाषा पर अधिकार और आत्मविश्वास की कसौटी है। सीमित समय में विषय को समझकर उसे प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना आज के बैंकिंग परिदृश्य में एक अत्यंत उपयोगी कौशल है। इंडियन बैंक सदैव राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु समर्पित व ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम में उपस्थित श्री प्रलयंकर सिंह, मुख्य प्रबंधक ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम के द्वारा हम नराकास के प्रति न केवल अपने दायित्व का निर्वहन करते हैं अपितु कार्यालयीन कामकाज के रूप में हिंदी को पूर्णतः स्थापित करने में मदद मिलती है। उक्त कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से सहभागिता की। उक्त कार्यक्रम का संचालन इडियन बैंक में कार्यरत राजभाषा अधिकारी श्री दीपक कुमार साव ने किया।

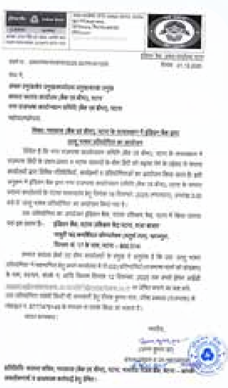

इंडियन बैंक ने आयोजित की आशुभाषण प्रतियोगिता

इंडियन बैंक में आशु भाषण प्रतियोगिता आयोजित

इंडियन बैंक कार्यालय में आशु भाषण प्रतियोगिता

आज पटना मह

बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी के व्यावहारिक एवं सृजनात्मक प्रयोग की आवश्यकता : वीरेंद्र

आशु भाषण प्रतियोगिता

इंडियन बैंक ने कराई आशु भाषण प्रतियोगिता

बुधवार को आशु भाषण प्रतियोगिता में शामिल इंडियन बैंक के अधिकारी।

पटना। इंडियन बैंक अंचल कार्यालय, पटना की ओर से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के बैनर तले आशु भाषण प्रतियोगिता हुई। मुख्य अतिथि हिंदी सलाहकार समिति, भारत सरकार के सदस्य वीरेंद्र कुमार यादव ने प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग पर बल दिया। अध्यक्षता अंचल प्रबंधक अमन कुमार झा ने की। मुख्य प्रबंधक प्रभाकर सिंह, राजभाषा अधिकारी दीपक कुमार साव आदि मौजूद रहे।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

पटना, 1 नवम्बर, 2025 - इंडियन बैंक द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत पटना में एक वॉकथॉन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व श्री एफ.आर.बुख़ारी, उप महाप्रबंधक, एफजीएम, पटना ने किया। उनके साथ श्री अमन कुमार झा, अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय, पटना, श्री साकेत कुमार, सहायक महाप्रबंधक, एफजीएम, श्री आर. एन. शर्मा, सहायक महाप्रबंधक, एफजीएम, पटना तथा श्री शैलेश कुमार, उप अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय पटना सहित पटना अंचल के अन्य कार्यपालक, अधिकारी एवं कर्मचारीगण मौजूद रहे ।

इस वॉकथॉन का उद्देश्य ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के संदेश का प्रसार करना तथा भ्रष्टाचार-मुक्त भारत के निर्माण के लिए सामूहिक संकल्प को मजबूत करना था।

राष्ट्रीय कर्मयोगी प्रशिक्षण : अंचल कार्यालय पटना (एक विहंगावलोकन)

राष्ट्रीय कर्मयोगी प्रशिक्षण, भारत सरकार की एक पहल है जिसका लक्ष्य भारत सरकार के सिविल सेवकों को नागरिक-केंद्रित, कुशल और नैतिक बनाने के लिए उनकी क्षमता और कौशल का विकास करना है, जो 'सेवा भाव' और भूमिका-आधारित प्रशिक्षण पर केंद्रित है और इसे iGOT कर्मयोगी पोर्टल के माध्यम से प्रदान किया जाता है।

मुख्य उद्देश्य

- **नागरिक-केंद्रित दृष्टिकोण :**

  अधिकारियों को नागरिकों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए तैयार करना।

- **भूमिका-आधारित क्षमता निर्माण :**

  नियमों से हटकर, भूमिका-विशिष्ट और मांग-संचालित प्रशिक्षण देना।

- **डिजिटल शिक्षा :**

  iGOT कर्मयोगी पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन और व्यक्तिगत शिक्षण।

- **'सेवा भाव' :**

  लोक सेवकों में सेवा की भावना और जिम्मेदारी का विकास करना।

- **सहयोग और नवाचार :**

विभागों के बीच सहयोग बढ़ाना और नवोन्मेषी कार्य करना।

मिशन कर्मयोगी

यह एक रणनीतिक पहल है जिसका उद्देश्य शासन में सुधार करना है। इसका लक्ष्य 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सिविल सेवकों को तैयार करना है। कुल मिलाकर कहा जाए राष्ट्रीय कर्मयोगी प्रशिक्षण एक व्यापक कार्यक्रम है जो भारतीय सेवा कर्मियों को आधुनिक, जवाबदेह और प्रभावी बनाने के लिए प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी और नवोन्मेषी व समावेशी मानसिकता को एकीकृत करता है।

स्टाफ सदस्यों के बच्चों की रचनात्मक कलाकृतियाँ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), पटना के 83 वीं बैठक का आयोजन

हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अंतर्गत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), पटना के 83 वीं बैठक में वित्तीय वर्ष 2024 - 25 के दौरान इंडियन बैंक अंचल कार्यालय पटना को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही नराकास के तत्वावधान में विभिन्न सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में इंडियन बैंक के प्रतिभागियों को कुल चार पुरस्कार प्राप्त हुए। उक्त अवसर पर नराकास की गृह पत्रिका पाटलिपुत्र प्रभा का भी विमोचन किया गया जिसका संपादन कार्य का प्रमुख दायित्व इंडियन बैंक ने निभाया। कुल मिलाकर नराकास (बैंक एवं बीमा), पटना की बैठक संबंधी गतिविधियों में इंडियन बैंक ने ईमानदारी व निष्ठा के साथ सक्रिय सहभागिता की एवं अपने दायित्व को बखूबी निभाया।

श्री विचित्र सेन गुप्त, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की उपस्थिति में श्री सुजीत कु. अरविन्द, क्षेत्रीय निदेशक, आरबीआई पटना व अध्यक्ष नराकास (बैंक एवं बीमा), पटना द्वारा राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए श्री अमन कुमार झा, अंचल प्रबंधक व उप महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, पटना।

इंडियन बैंक द्वारा संपादित नराकास (बैंक एवं बीमा), पटना की गृह पत्रिका 'पाटलिपुत्र प्रभा' का विमोचन करते हुए विशिष्ट व गणमान्य अतिथिगण व भारत सरकार के प्रतिनिधिगण।

अन्य झलकियाँ

21 अगस्त 2025
संयोजक : भारतीय रिज़र्व बैंक

SBI

अपने काम हिंदी में ही करें सभी बैंक और बीमा कंपनियां
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 83वीं छमाही बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), पटना
हिंदी गृह पत्रिका

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), पटना
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार
संयोजक : भारतीय रिज़र्व बैंक, पटना
प्रमाण-पत्र

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), पटना
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार
संयोजक : भारतीय रिज़र्व बैंक, पटना
प्रमाण-पत्र

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), पटना
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत
संयोजक : भारतीय रिज़र्व बैंक, पटना
प्रमाण-पत्र
बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र द्वारा आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता
में इंडियन बैंक से संबद्ध
को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ है।
तिथि : 21 अगस्त 2025

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), पटना
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार
संयोजक : भारतीय रिज़र्व बैंक, पटना
प्रमाण-पत्र
विषय लेखन
द्वितीय

हिंदी साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद जयंती के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन

इंडियन बैंक राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार, संवैधानिक प्रावधानों, नियमों और अधिनियमों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहा है। कार्मिकों में हिंदी के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करने एवं साहित्यिक विरासत के संवेदनात्मक जगत का रसास्वादन करने के उद्देश्य से हिंदी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद जयंती के उपलक्ष्य में साहित्यिक परिचर्चा के रूप में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), पटना के तत्वावधान में इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय पटना द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उक्त संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 31 जुलाई, 2025 को 'हमारा समय और प्रेमचद का साहित्य' विषय पर आयोजित किया गया जिसमें प्रो. तरूण कुमार, भूतपूर्व प्राचार्य, पटना विश्वविद्यालय एवं प्रसिद्ध लोकभाषाविद् डॉ. अमरेंद्र नाथ त्रिपाठी, प्राध्यापक, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद रहें।

उक्त कार्यक्रम में समसामयिक परिप्रेक्ष्य में मुंशी प्रेमचंद के साहित्य का विशद व व्यापक चित्रण किया गया और जमींदारी प्रथा व महाजनी सभ्यता के घातक पहलूओं एवं जनजीवन की त्रासदी सबंधी बिन्दुओं का संवेदनात्मक निरूपण किया गया और सामान्य लोगों के विकास व आत्मनिर्भर भारत बनने की प्रक्रिया में बैंकों की भूमिका, वित्तीय समावेशन व जन सुरक्षा योजनाओं की उपयोगिता पर व्यापक चित्रण किया गया।

कार्यक्रम की झलकियाँ

नराकास (बैंक एवं बीमा), पटना के तत्वावधान में इंडियन बैंक द्वारा आयोजित संगोष्ठी में मचासीन डॉ. अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी, सहायक प्राध्यापक, प्रो. तरूण कुमार (सेवानिवृत्त, पटना विश्वविद्यालय), श्री अमन कुमार झा, अंचल प्रबंधक, श्री अखिलेश कुमार, नराकास सदस्य सचिव (बायें से दायें)।

नराकास (बैंक एवं बीमा), पटना के तत्वावधान में इंडियन बैंक द्वारा आयोजित संगोष्ठी में मंचासीन डॉ. अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी, सहायक प्राध्यापक, प्रो. तरूण कुमार (सेवानिवृत्त, पटना विश्वविद्यालय), श्री अमन कुमार झा, अंचल प्रबंधक, श्री अखिलेश कुमार, नराकास सदस्य सचिव (बायें से दायें)।

मुख्य अतिथि प्रो. तरुण कुमार "हमारा समय एवं प्रेमचंद का साहित्य" विषय पर व्याख्यान देते हुए।

मुख्य अतिथि प्रो. अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी "हमारा समय एवं प्रेमचंद का साहित्य" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

श्री अमन कुमार झा, अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय पटना श्री अखिलेश कुमार, सदस्य सचिव नराकास का अभिनन्दन करते हुए।

श्री अमन कुमार झा, अंचल प्रबंधक महोदय अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए।

श्री अमन कुमार झा, अंचल प्रबंधक महोदय श्री अखिलेश कुमार को स्मृति चिन्ह भेट करते हुए।

संगोष्ठी में उपस्थित नराकास के सदस्य कार्यालयों के उपस्थित अधिकारी व कार्यपालकगण

श्री अमन कुमार झा, अंचल प्रबंधक महोदय प्रो. तरूण कुमार को स्मृति-चिह्न भेंट करते हुए।

श्री अमन कुमार झा, अचल प्रबंधक महोदय डॉ अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी को स्मृति चिह्न भेद करते हुए।

नराकास (बैंक एवं बीमा), पटना के सदस्य कार्यालयों की सहभागिता

श्री अमन कुमार झा, अचल प्रबंधक पटना प्रो. तरूण कुमार जी का स्वागत करते हुए।

श्री अखिलेश कुमार, सदस्य सचिव, नराकास मुशी प्रेमचद के साहित्य की प्रासंगिकता पर अपना विचार प्रस्तुत करते हुए।

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री ब्रजेश कुमार सिंह का पटना दौरा

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री ब्रजेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में 7 अगस्त 2025 को पटना के एलएमएनआई ऑडिटोरियम में टाउन हॉल मीटिंग इंडियन बैंक के कार्यपालक, अधिकारी व स्टाफसदस्यों की प्रचुर संख्या के बीच आयोजित हुआ। उक्त अवसर पर उन्होंने अपने स्टाफ सदस्यों के बीच कार्यदक्षता एवं नेतृत्व क्षमता के विकास पर जोर देते हुए बैंक के वर्तमान व्यवसायिक परिदृश्य एवं संभावनाओं व चुनौतियों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि आज हमें डिपोजिट यानी जमाराशि पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। बैंक के कासा प्रतिशत को बढ़ाना है ताकि हम इस प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में अपने सम्मानीय ग्राहकों को कम ब्याज-दरों में ऋण प्रदान करके मुनाफा अर्जित कर सकें। आज इंडियन बैंक न केवल राष्ट्रीयकृत बैंकों अपितु निजी बैंकों की तुलना में कुछ मानकों में आगे हैं। इंडियन बैंक को बेस्ट पब्लिक सेक्टर बैंक और सीईओ ऑफ द ईयर पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने उपस्थित समस्त स्टाफ सदस्यों का हौंसला बढ़ाते हुए इंडियन बैंक के व्यवसायिक लाभ एवं मजबूत बैलेंस शीट के लिए सारा श्रेय स्टाफ सदस्यों के समर्पित एवं कुशल बैंकिंग सेवा को दिया। उन्होंने कहा कि इंडियन बैंक के समस्त स्टाफ सदस्यगण काफी सजग, सक्षम एवं कुशल है और ग्राहक बेस निरंतर बढ़ते रहने एवं संतुष्ट व डिजिटल केंद्रित ग्राहक सेवा प्रदान करने के कारण इंडियन बैंक आज प्रत्येक तिमाही दर तिमाही एवं वार्षिक लाभ अर्जित कर रहा है। उक्त अवसर पर पटना के क्षेत्र महाप्रबंधक श्री विवेक, कॉर्पोरेट कार्यालय के महाप्रबंधक श्री अन्बुकामराज पी. (आर एंड जीआर) ने बैंक के वर्तमान परिदृश्य के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित किया।

इंडियन बैंक और आईजीआईएमएस के बीच कैशलेश भुगतान हेतु प्रीपेड कार्ड के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर

दिनांक 8 अगस्त 2025 को आईजीआईएमएस और इंडियन बैंक के बीच मरीजों के भुगतान हेतु एक विशिष्ट प्रीपेड कैशलेश आईजीआईएमएस कार्ड के लिए इंडियन बैंक के माननीय कार्यपालक निदेशक श्री ब्रजेश कुमार सिंह और आईजीआईएमएस के निदेशक श्री बिनय कुमार पांडेय की उपस्थिति में एमओयू (समझौता ज्ञापन) पर हस्ताक्षर किया गया। उक्त अवसर पर आईजीआईएमएस के डीन (संकाय अधिष्ठाता) श्री ओम कुमार, श्री मनीष कुमार, मेडिकल अधीक्षक, श्री अनिल चौधरी, वित्तीय सलाहकार सह मुख्य लेखाजोखा अधिकारी उपस्थित रहें। इसके साथ इंडियन बैंक से श्री विवेक, क्षेत्र महाप्रबंधक, पटना श्री अन्बुकामराज पी. महाप्रबंधक (आरएंडजीआर), श्री अमन कुमार झा, अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय, पटना, श्री एफ.आर. बुख़ारी, उप महाप्रबंधक, क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय पटना उपस्थित रहें। इस शुभावसर पर आईजीआईएमएस में मरीजों के भुगतान में विशेष सुविधा मुहैया कराने के लिए एक विशेष प्रीपेड कैशलेश आईजीआईएमएस कार्ड लॉच किया गया है। इसके माध्यम से मरीज अब आईजीआईएमएस में भर्ती के समय ही रजिस्ट्रेशन के साथ कार्ड भी लिंक कर दिया जाएगा। माननीय कार्यपालक निदेशक श्री ब्रजेश कुमार सिंह के कर कमलों द्वारा पाटलिपुत्र शाखा के नवीनीकृत परिसर का उद्घाटन हुआ।

इंडियन बैंक ने माननीय कार्यपालक निदेशक श्री शिव बजरंग सिंह की गरिमामयी उपस्थिति में रिकेवाईसी, वित्तीय जागरूकता व सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से संबंधित मेगा शिविर का भव्य आयोजन किया

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री शिव बजरंग सिंह की गरिमामयी उपस्थिति व अध्यक्षता में 20 सितम्बर, 2025 (शनिवार) को बिहार की राजधानी पटना के बिहटा प्रखंड में नेताजी सुभाष मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के ऑडिटोरियम में अपने सम्मानीय ग्राहकों के लिए वित्तीय जागरूकता अभियान का संचालन करते हुए रिकेवाईसी, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से संबंधित मेगा शिविर का आयोजन किया। उक्त अवसर पर माननीय कार्यपालक निदेशक श्री शिव बजरंग सिंह की अध्यक्षता में रिकेवाईसी शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया जिसमें पटना अंचल के लगभग 10 हजार खातों का रिकेवाईसी किया गया ताकि हमारे सम्मानीय ग्राहकवृंद व्यवधान रहित अपने बैंकिंग खातों व सेवाओं का समुचित व सुगमतापूर्वक परिचालन कर सके। इसके साथ ही उक्त अवसर पर वित्तीय समावेशन के अंतर्गत सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को लेकर भी विस्तृत व व्यापक चर्चा की गई। माननीय कार्यपालक निदेशक महोदय ने कहा कि देश के अंतिम पायदान के लोगों तक माननीय प्रधानमंत्री द्वारा प्रायोजित सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ पहुंचे। इंडियन बैंक सदैव इसके लिए तत्पर व प्रतिबद्ध है। बैंक मित्र व ग्राहक सेवा केंद्र द्वारा हम सुदूर क्षेत्र में स्थित दूर-दराज के गांवों के लोगों तक न केवल बैंकिंग सेवा मुहैया कराते हैं अपितु माननीय प्रधानमंत्री जी की महत्वकांक्षी जन-सुरक्षा बीमा योजना द्वारा जरूरतमंद परिवारों को आर्थिक सुरक्षा भी प्रदान करते हैं। उक्त अवसर पर माननीय कार्यपालक निदेशक महोदय श्री शिव बजरंग सिंह की अध्यक्षता में जीविका दीदीयों के लिए स्वयं सहायता समूह क्रेडिट लिंकेज शिविर का व्यापक व भव्य स्तर पर आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर इंडियन बैंक ने ग्रामीण आजीविका बढ़ावा देने के लिए बिहार ग्रामीण आजीविका संवर्धन सोसाइटी के सहयोग से बिहटा प्रखंड में 400 जीविका दीदीयों के लिए 80 एसएचजी महिला समूह में रु. 1.20 करोड़ का संवितरण किया। उक्त अवसर पर बीआरएलपीएस, जीविका के प्रतिनिधि भी मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। इंडियन बैंक की ओर से क्षेत्र महाप्रबंधक श्री विवेक, पटना अंचल प्रबंधक श्री अमन कुमार झा, उप अंचल प्रबंधक श्री शैलेश कुमार, श्री प्रलयंकर सिंह, मुख्य प्रबंधक, (एचआर) एवं इंडियन बैंक के अन्य कार्यपालकगण व अधिकारीगण उपस्थित थे। इस अवसर पर माननीय कार्यपालक निदेशक श्री शिव बजरंग सिंह ने उपस्थित सभी दीदीयों को संबोधित करते हुए कहा कि आत्मनिर्भर व विकसित भारत बनाने की दिशा में ग्रामीण महिलाओं का अभूतपूर्व योगदान है। उन्हें वित्तीय स्वावलंबी, आर्थिक आजादी व विशिष्ट सामाजिक पहचान के लिए स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए इंडियन बैंक सदैव प्रतिबद्ध व समर्पित है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर इंडियन बैंक अपने सम्मानीय ग्राहकों को रु. 20 करोड़ कृषि आधारित ऋण भी उपलब्ध कराया। इसके साथ ही रिकेवाईसी मेगा कैंप का आयोजन भी किया गया ताकि ग्राहक अपने बैंक खातों के समुचित एवं व्यवधान रहित संचालन कर सके।

Venue : NSMCH, Bihta, Patna
Date : 20.09.2025

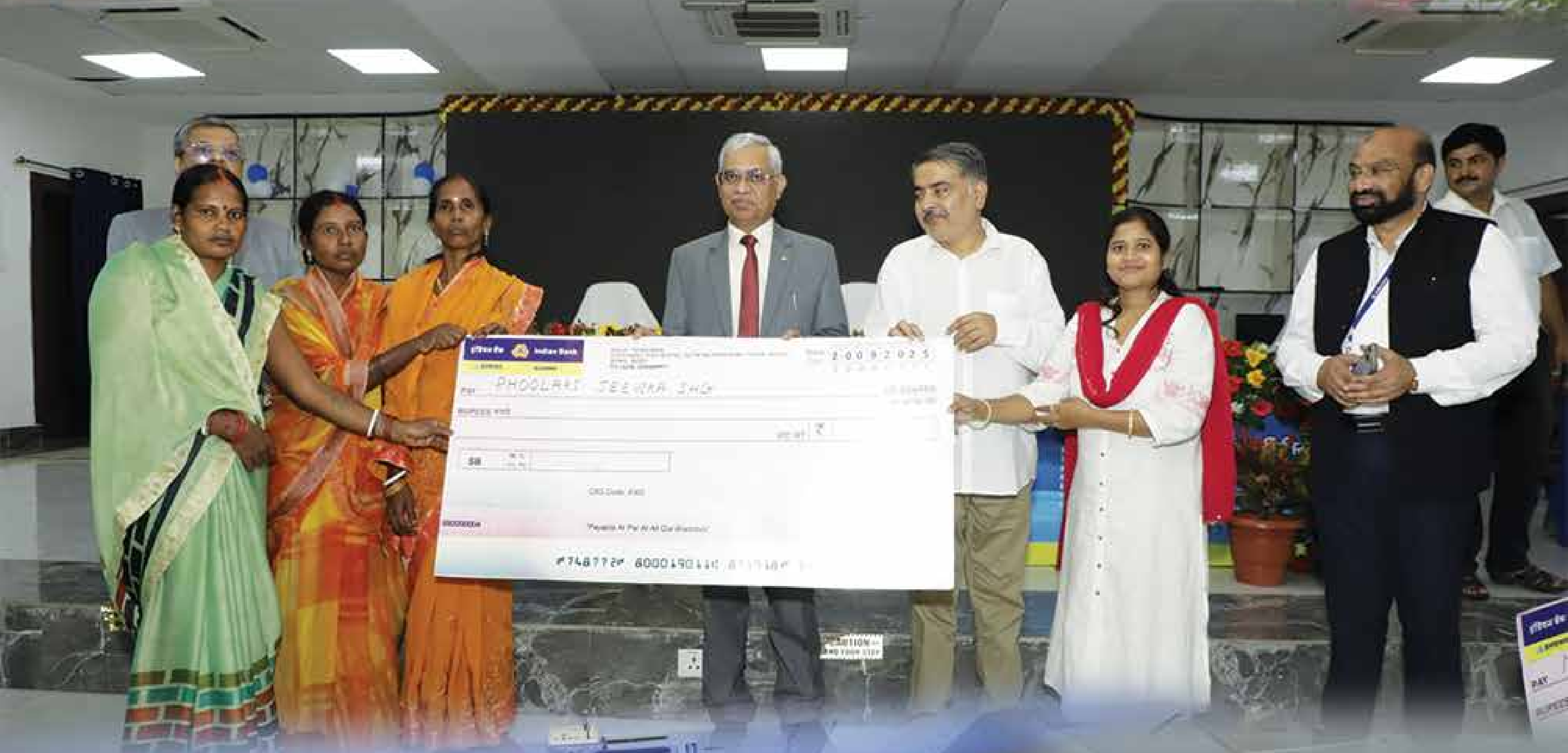
Indian Bank
PHOOLARI JEEVIKA SHG

SHG Credit Linkage Camp
वित्तीय समावेशन संतृप्ति
Financial
इंडियन बैंक Indian Bank
स्वयम् सहायता समूह
क्रेडिट लिंकेज शिविर
SHG Credit Linkage Camp
वित्तीय समावेशन संतृप्ति

इंडियन बैंक को वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सुश्री मिनी टी. एम. कार्यपालक निदेशक अगरतला में 20 फरवरी 2026 को आयोजित भव्य समारोह में माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के कर-कमलों से पुरस्कार ग्रहण करते हुए।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय पटना को राजभाषा पुरस्कार द्वितीय से सम्मानित किया गया

श्री अमन कुमार झा, अंचल प्रबंधक, पटना माननीय केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री बंडी संजय कुमार के कर कमलों से राजभाषा पुरस्कार ग्रहण करते हुए